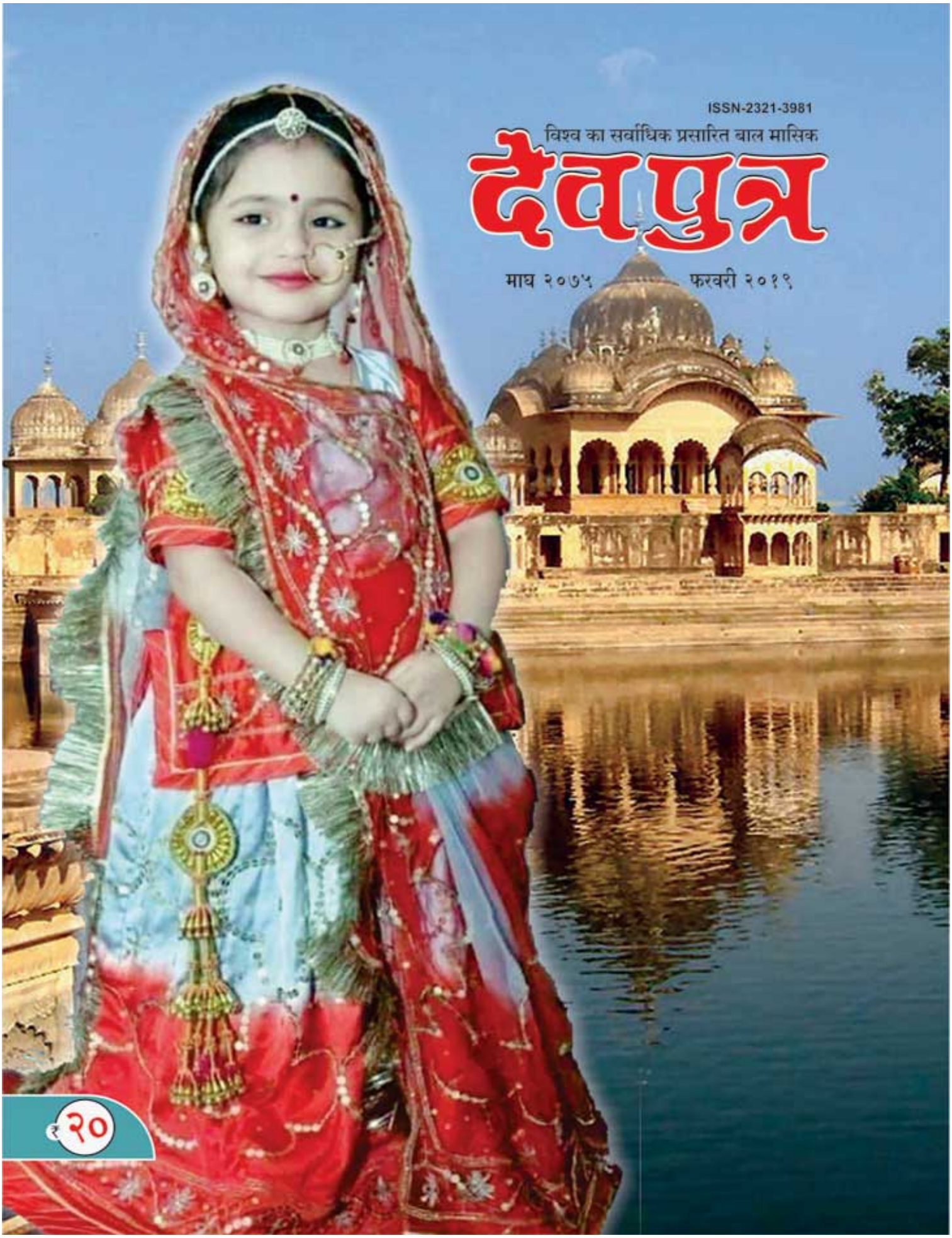

ISSN-2321-3981
विश्व का सर्वाधिक प्रसारित बाल मासिक
देवपुत्र
माघ २०७५
फरवरी २०१९
₹ २०

दृष्टि The Vision

दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम (Distance Learning Programme)

इस कार्यक्रम के अंतर्गत आप घर बैठे 'दृष्टि' द्वारा तैयार परीक्षोपयोगी पाठ्य-सामग्री मंगवा सकते हैं। यह पाठ्य-सामग्री प्रत्येक परीक्षा के नवीनतम पाठ्यक्रम के अनुरूप है और इसे विभिन्न सममसामयिक घटनाओं, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं एवं समितियों की रिपोर्टों के माध्यम से अद्यतन (up-to-date) किया गया है।

UPSC सिविल सेवा परीक्षा के लिये (हिंदी माध्यम में)

सामान्य अध्ययन (प्रारंभिक परीक्षा) 19 बुकलेट्स	सामान्य अध्ययन (मुख्य परीक्षा) 26 बुकलेट्स	सामान्य अध्ययन (प्रा.+ मुख्य परीक्षा) 31 बुकलेट्स
सामान्य अध्ययन + सीसैट (प्रारंभिक परीक्षा) 27 बुकलेट्स		सामान्य अध्ययन + सीसैट (प्रा.+ मुख्य परीक्षा) 39 बुकलेट्स
इतिहास (वैकल्पिक विषय) 12 बुकलेट्स	हिन्दी साहित्य (वैकल्पिक विषय) 13 बुकलेट्स	दर्शन शास्त्र (वैकल्पिक विषय) 4 बुकलेट्स

PCS सिविल सेवा परीक्षा के लिये (हिंदी माध्यम में)

उत्तर प्रदेश पी.सी.एस.	मध्य प्रदेश पी.सी.एस.	उत्तराखंड पी.सी.एस.	राजस्थान पी.सी.एस.
सामान्य अध्ययन + सीसैट (प्रा.+ मुख्य परीक्षा) 43 बुकलेट्स	सामान्य अध्ययन + सीसैट (प्रा.+ मुख्य परीक्षा) 36 बुकलेट्स	सामान्य अध्ययन + सीसैट (प्रा.+ मुख्य परीक्षा) 36 बुकलेट्स	सामान्य अध्ययन (प्रा.+ मुख्य परीक्षा) 34 बुकलेट्स
सामान्य अध्ययन (प्रा.+ मुख्य परीक्षा) 33 बुकलेट्स	सामान्य अध्ययन (प्रा.+ मुख्य परीक्षा) 28 बुकलेट्स	सामान्य अध्ययन (प्रा.+ मुख्य परीक्षा) 28 बुकलेट्स	बिहार पी.सी.एस. सामान्य अध्ययन (प्रा.+ मुख्य परीक्षा) 25 बुकलेट्स

अधिक जानकारी के लिये हमारी वेबसाइट www.drishtiIAS.com पर विज़िट करें।

बेसिक इंग्लिश

निःशुल्क परिचर्चा के साथ बैच प्रारंभ

28 जनवरी
दोपहर 12:00 बजे

सामान्य अध्ययन

निःशुल्क परिचर्चा के साथ बैच प्रारंभ

29 जनवरी
प्रातः 11:30 बजे

विस्तृत जानकारी के लिये कॉल करें 8448485519, 8448485520, 87501-87501

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

माघ २०७५ ▪ वर्ष ३९
फरवरी २०१९ ▪ अंक ८

प्रधान संपादक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

प्रबंध संपादक
डॉ. विकास दवे

कार्यकारी संपादक
गोपाल माहेश्वरी

मूल्य

एक अंक	:	२० रुपये
वार्षिक	:	१८० रुपये
त्रैवार्षिक	:	५०० रुपये
पंचवार्षिक	:	७५० रुपये
आजीवन	:	१४०० रुपये
सामूहिक वार्षिक	:	१३० रुपये

(कम से कम १० अंक लेने पर)

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

संपर्क

४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००३३९, ४३९
e-mail: devputraindore@gmail.com

सीधे 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' के खाते में राशि जमा करने हेतु –
खाता संख्या –53003592502
IFSC-SBIN0030359
आलोक : कृपया केवल 5000 रु. से अधिक की राशि जमा करने हेतु ही कोर बैंकिंग सुविधा का उपयोग करें।

अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनो,

मनुष्य जीवन प्राप्त करने के बाद हमारा अंतिम लक्ष्य क्या है? क्या आपने कभी विचार किया है कि हम सब इतनी पढ़ाई क्यों करते हैं? आप कहेंगे अच्छी नौकरी प्राप्त हो जाए इसलिए। नौकरी और अच्छा वेतन क्यों पाना चाहते हैं? आप कहेंगे गाड़ी, बंगला सारे सुख-सम्पन्नता के साधनों को पाने के लिए। यदि फिर पूछा जाए ये सब क्यों पाना चाहते हैं? तो अंत में कुछ शब्द मिलेंगे 'सेटिसफेक्शन', 'एन्जॉय' सुख यानी जीवन में आनन्द की प्राप्ति के लिए ही हम यह सब कुछ करते हैं।

तो आपको ध्यान में आया ना हमारे सभी क्यों का अंतिम उत्तर इस आनन्द पर ही आकर समाप्त होता है। किन्तु क्या यह सब पाने के बाद भी मनुष्य को वह आनन्द प्राप्त होता है क्या? यदि इन सबसे ही मिलता तो पश्चिमी देशों में संसाधनों की इतनी भरमार होने के बाद भी वहाँ अवसाद, पागलपन और आत्महत्या के प्रकरणों का बढ़ना तो यही सिद्ध करता है कि आनन्द तो उन लोगों को भी प्राप्त नहीं हो रहा।

इस समय देश के कई भागों में कड़ाके की सर्दी पड़ रही है। कई बार बेघर और गरीब लोग फुटपाथों पर ठिठुरते हुए रातें बिताने पर मजबूर रहते हैं। इसी मध्य एक विडियों देखा कुछ तरुण मध्यरात्रि में इन्दौर की सुनसान सड़कों पर बाईक पर ढेर सारे कंबल लेकर निकलते हैं और ठंड से ठिठुर रहे इन सब लोगों को औढ़ाते जाते हैं। न कोई नाम, न कोई फोटो। एक पत्रकार ने उनसे पूछ लिया- "यह सब क्यों करते हो?" उनका बड़ा सरल सा उत्तर था- "आत्मिक आनन्द के लिए।"

तो ध्यान में आया आपको ये 'आनन्द' हम ढूंढते कहाँ हैं, और मिलता कहाँ है?

जीवन में 'आनन्द' पाने का प्रयास अवश्य करिए पर 'कनफ्यूज' होने की आवश्यकता नहीं। ईश्वर आप सबको खूब 'आनन्द' दे ताकि हम सब अपना जीवन सार्थक अनुभव कर सकें।

आपका
बड़ा भैया

web site - www.devputra.com

अनुक्रमणिका

कहानी

- जन्मदिन का उत्सव - डॉ. फकीरचन्द शुक्ला ०५
- और नैना जीत गई - गुड़विन मसीह १८
- डाकू लौट गए - विष्णुप्रसाद चतुर्वेदी २८
- परी ने कहा है - डॉ. घमण्डीलाल अग्रवाल १३
- जिज्ञासा - तारादत्त जोशी ३६

कविता

- हे विद्या की देवी - ओम उपाध्याय ०९
- हाथीजी को ठण्ड लगी - शुभदा पाण्डेय ०९
- धर्मवीर हकीकत - मदन गोपाल सिंहल १०
- खुश होता है मोबाईल - डॉ. राकेश चक्र ३९
- फूलों ने बारात सजाई - रावेन्द्र कुमार 'रवि' ४०
- कम्प्यूटर पर चिड़िया - प्रभुदयाल श्रीवास्तव ४१
- भारत देश - डॉ. चक्रधर नलिन ५०

आलेख

- शहीद बाबा तिलका मांझी - अंकुश्री १६

प्रसंग

- बिना विचारे जो करे - कृष्णचन्द्र टवाणी २६

जानकारी

- ये हैं विशाल स्तनपायी - संकेत गोस्वामी २४

चित्रकथा

- दादाजी की मदद - देवांशु वत्स २१
- इनडोर गेम्स - देवांशु वत्स ४५

स्तंभ

- गाथा वीर शिवाजी की (२५) - २२
- संस्कृति प्रश्नमाला - २३
- हमारे राज्य वृक्ष - डॉ. परशुराम शुक्ल २७
- कामरूप के संत साहित्यकार - डॉ. देवेनचन्द्र दास 'सुदामा' ३२
- पुस्तक परिचय - ४२
- आपकी पाती - ४३

स्तंभ

- अगर मैं वृक्ष बनता - वैदिका सक्सेना 'अर्शी' ३५
- हाथी आया - जय कुर्मी ३५

क्या आप देवपुत्र का शुल्क नेट बैंकिंग से जमा करा रहे हैं?

तो कृपया ध्यान दें!

देवपुत्र का शुल्क इसकी प्रकाशन संस्था **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** के खाते में ही जमा कराएँ।

विवरण इस प्रकार है-

खातेदार - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास**

बैंक - **स्टैट बैंक ऑफ इण्डिया, एम.वाय.एच.परिसर शाखा, इन्दौर**

खाता क्रमांक - **53003592502**

IFSC- **SBIN0030359**

राशि जमा करने के बाद जमा पर्ची को देवपुत्र के मेल ID devputraindore@gmail.com पर अवश्य भेजिए।

नेट बैंकिंग में प्रेषक के कॉलम में पहले अपना स्थान लिखें फिर **सरस्वती शिशु मंदिर** का संक्षेप लिखें तो सन्देश ठीक आता है।

उदाहरण के लिए -

सरस्वती शिशु मंदिर, संजीत मार्ग, मंदसौर ने देवपुत्र का शुल्क भेजा तो उन्हें प्रेषक में लिखना चाहिए -

"**मन्दसौर संजीत मार्ग SSM** " आशा है सहयोग प्रदान करेंगे।

जन्मदिन का उत्सव

कहानी : डॉ. फकीरचंद शुक्ला

आज कक्षा में एक बार फिर मिठाई बांटी गई थी क्योंकि राजा का जन्मदिन था। अभी पिछले सप्ताह ही तो मोहन ने सारी कक्षा में रसगुल्ले खिलाये थे क्योंकि उस दिन उसका जन्मदिन था।

इस विद्यालय में इस प्रकार का प्रचलन देखकर शशांक को प्रसन्नता भी होती है और दुःख भी। खुशी इस बात की कि महीने में दो–तीन बार मुफ्त में ही कुछ ना कुछ खाने को मिल जाता है। कई बार तो एक सप्ताह में ही दो–दो तीन–तीन बच्चों के जन्मदिन आ जाते हैं। लेकिन प्रायः शशांक का मन उदास हो जाता कि जब उसका जन्मदिन आएगा तब वह क्या करेगा? उसके माँ–पिता तो इतना खर्च नहीं कर पायेंगे। वे तो उसका शुल्क तथा कापियों–किताबों का खर्च ही मुश्किल से निकाल पाते हैं।

शशांक के पिता जी एक निजी कम्पनी में काम करते हैं। ग्रीष्म ऋतु में भी उन्हें लोहा पिघलाने वाली भट्टियों पर काम करना पड़ता है। उसकी माँ हौजरियों में से जरसियां लाकर उन पर बटन टांकने का काम करती हैं, ताकि परिवार की आमदनी में कुछ वृद्धि हो सके। उनका मकान भी किराये का है। आजकल मकानों के किराये कौन से कम हैं।

शशांक के मन में प्रायः इस प्रकार के विचार कौंधते रहते हैं। विशेषकर जब कोई बच्चा अपने जन्मदिन के उपलक्ष्य में कक्षा में मिठाई बांटता तो कई दिन वह बैचेन रहता। परिवार की आर्थिक स्थिति से भली प्रकार से

परिचित होने के बावजूद भी यह विचार उसके मस्तिष्क में प्रायः घूमता रहता कि परिवार वाले उसका जन्मदिन क्यों नहीं मनाते? वे और खर्च भी तो करते ही हैं। वह प्रायः सोचता रहता कि अगर उसके घर वाले मान जायें तो वह भी इस बार अन्य बच्चों की तरह कक्षा में मिठाई बांट कर अपना जन्मदिन मनाये। इस प्रकार उसकी भी कक्षा में ठाठ बन जायेगी। मगर परिवार की आर्थिक स्थिति का विचार आते ही उसका जोश ठंडा पड़ जाता।

पहले शशांक सरकारी विद्यालय में पढ़ता था। वहां शायद ही कभी किसी ने इस प्रकार सारी कक्षा में मिठाई बांटकर अपना जन्मदिन मनाया हो। अगर कोई विद्यार्थी अपना जन्मदिन मनाता भी था तो अपने दो–चार घनिष्ठ मित्रों को आधी छुट्टी के समय विद्यालय की कैंटीन में समोसे अथवा टिक्कियां खिला देता था। वहां ऐसा तो कभी नहीं हुआ था कि सारी कक्षा को ही कुछ न कुछ खिलाया जाए। मगर आठवीं कक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् अच्छे अंक प्राप्त करने की वजह से उसे इस विद्यालय में प्रवेश मिल गया था। इस शाला की पढाई यद्यपि पहले विद्यालय की अपेक्षा बढिया थी मगर जन्मदिन मनाने वाला यह अजीब सा चलन देखकर शशांक को काफी आश्चर्य हुआ था।

परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी ना होने के कारण यद्यपि शशांक मन मसोस कर रह जाता था, मगर जब भी कोई बच्चा जन्मदिन मनाता, उसके मन में बुझे सपने फिर से उजागर हो जाते। जब सभी विद्यार्थी उस बच्चे को एक स्वर में जन्मदिन की बधाई देते तो अनायास ही उसके मन में भी विचार घूमने लगते कि काश वह भी कक्षा में अपना जन्मदिन मनाये तथा सभी सहपाठी खुश होकर एक स्वर में उसे भी जन्मदिन की बधाई दें।

ज्यों–ज्यों शशांक का जन्मदिन निकट आ रहा था, अपने आप पर नियंत्रण रख पाना उसके लिए कठिन हो रहा था।

और एक दिन उसने अपने पिता जी से अपने मन की बात कह दी थी।

''तुम्हारा दिमाग तो नहीं खराब हो गया,'' उसके पिताजी थोड़ा क्रुद्ध होकर बोले थे– ''यहां दो जून रोटी की चिन्ता सताये रहती है और इसे जन्मदिन मनाने की पड़ी है।''

मगर ना तो उनके समझाने का और ना ही उनके तर्कों का शशांक पर कुछ प्रभाव पड़ा था। उसने तो मन में ठान लिया था कि इस बार अपना जन्मदिन अवश्य मनायेगा, चाहे कुछ भी हो जाये। फिर जन्मदिन कौन–सा हर रोज आता है, मुश्किल से साल में एक बार...और वह भी बिना मनाये निकल जाये, इससे तो अच्छा है कि जन्मदिन आए ही न।

उसे अपनी माँ पर भी गुस्सा आ रहा था। यह कैसा ढंग हुआ जन्मदिन मनाने का? हर साल जन्मदिन वाले दिन थाली में थोड़े–चावल तथा एक गिलास में दूध डालकर दे देंगे और कहेंगे– ''जा बेटे, मंदिर में चढ़ा आ... पुजारी जी के पांव छूकर आशीर्वाद भी ले लेना।''

मगर इस बार उसने दृढ निश्चय कर लिया था कि या तो जन्मदिन उसी प्रकार से मनायेगा जिस प्रकार से कक्षा में बाकी बच्चे मनाते हैं, नहीं तो दूध–चावल लेकर मंदिर भी नहीं जायेगा।

उसकी जिद्द के कारण घर की शांति भी मानों भंग हो गई थी। यूं ही अकारण माता–पिता आपस में झगड़ने लगते थे। माँ तो चाहती थी कि इस बार जैसे शशांक चाहता है, वैसे कर दिया जाए। मगर पिताजी अपने ढंग से सोचते थे। इस प्रकार तो बेकार में ही दो अढ़ाई सौ रुपये खर्च हो जायेंगे।

आखिरकार जन्मदिन से एक दिन पहले पिताजी थोड़े शांत हो गए थे। उन्होंने प्यार से शशांक को समझाते हुए कहा था– ''बेकार में अपनी वाह–वाह करवाने के लिए पैसे खर्च करना हमारे वश की बात नहीं है। यह सब तो अमीरों के ढकोसले हैं। हम जैसे लोगों के लिए तो दो समय की रोटी चलाने के ही लाले पड़े रहते हैं।''

एक पल रुक कर उन्होंने कहा था– ''ऐसा कर, थोड़ी हम तुम्हारी बात मान लेते हैं, थोड़ा तुम मान जाओ। यह लो एक सौ रुपये, कल अपने दो चार मित्रों संग पार्टी कर लेना। चाहे तो शाम को उन्हें अपने घर ही बुला लेना। बेटे, घर की हालत तो तुम जानते हो। सारी कक्षा को आमंत्रण देना हमारी क्षमता के बाहर है।''

उनके समझाने का शशांक पर थोड़ा प्रभाव पड़ने लगा था। वह सोचने लगा कि चलो इस बार इतना ही सही। पूरी कक्षा को अगले वर्ष बुलाएगा, और उसने मन ही मन फैसला कर लिया था कि शाम को वह अपने घनिष्ठ मित्रों को घर बुलाकर नाश्ता करवाएगा।

वह सोचने लगा था कि किस–किस को बुलायें? चिंटू तथा सोनू को तो अवश्य बुलायेगा। आवश्यकता पढ़ने पर वे उसे गृहकार्य की कापियां दे देते हैं। विकास को नहीं बुलायेगा। वह तो बहुत अमीर है। कहीं उसके घर की दयनीय हालत देखकर बाद में मजाक न उड़ाने लग जाये।

खैर! उसने मन ही मन दो तीन मित्रों को बुलाने का फैसला कर लिया था।

अगले दिन अर्थात् जन्मदिन वाले दिन जब शाम को वह खाने पीने के लिए कुछ लाने के लिए घर से निकला तब आकाश पर काले बादल छाये हुए थे। वह मैदान के पास हलवाई की दुकान से समोसे तथा गुलाब जामुन लाना चाहता था। उस हलवाई की मिठाइयां बहुत प्रसिद्ध थीं।

अभी वह दुकान से दूर ही था कि एकदम वर्षा शुरु हो गई। हर तरफ भगदड़ मच गई। शशांक भी भाग कर एक घर के आगे रुक गया। घर का दरवाजा खुला था। वह वर्षा से बचने के लिए दरवाजे के पास सरक आया। उसी समय भीतर से आवाज आई–''बेटे, भीतर चले आ। कहीं वर्षा में भीग कर बीमार न पड़ जाना।''

शशांक भीतर चला आया। घर जर्जर हालत में था। कमरे की दीवारों से पलस्तर उतरा हुआ था। इधर–उधर कूड़ा कबाड़ा था। पास ही चारपाई पर एक दस–बारह वर्ष

का लड़का लेटे हुए खांस रहा था।

''आप इसके लिए कोई दवाई क्यों नहीं ले आते? खांस-खांस कर इसकी बुरी हालत हो गई है। सुबह से कितना तेज बुखार है इसे।'' वहां बैठी हुई औरत ने कहा तो वह आदमी थोड़ा क्रुद्ध होकर बोला- ''दवा कहां से लाऊं? जेब में तो फूटी कौड़ी भी नहीं है। चाय में तुलसी के पत्ते उबालकर पिला दें...स्वयं ही उतर जाएगा बुखार।''

''मगर चाय भी कैसे बनाऊं... ना घर में शक्कर है ना दूध? कहते हुए उस औरत की जैसे आँखें भर आई थीं।

''मगर मैं भी क्या करूं! इस बरसात का सत्यानाश हो। दो दिन से दिहाड़ी ही नहीं लगी। भगवान भी जैसे हम गरीबों की परीक्षा ले रहा है।'' कहते हुए उस आदमी का मन भी भर आया था।

उनकी बातें सुनकर शशांक तो जैसे स्तब्ध रह गया था। उसे लगा कि उसके पिताजी ही कहते हैं कि पार्टियां करना तो अमीर लोगों के ढकोसले है। आम आदमी को तो दो जून की रोटी के ही लाले पड़े रहते हैं।

वह कुछ पल सोचता रहा। आखिरकार उसने सौ का नोट उस आदमी की ओर बढ़ाते हुए कहा- ''काका, आप इस पैसों से इसके लिए दवा ले लाओ।''

''अरे नहीं बेटे...भगवान स्वयं ही कोई हल ढूंढ निकालेगा। तू क्यों कष्ट करता है?''

''नहीं काका, कष्ट वाली तो कोई बात नहीं है, फिर आज तो मेरा जन्मदिन है। मैं खुश होकर अपने छोटे भाई को दे रहा हूं...'' ना जाने क्यों, यू कहते हुए शशांक का मन भर आया था।

कुछ समय पश्चात वर्षा बंद हो गई थी और शशांक अपने घर की ओर चलने लगा था लेकिन उसका मन खुशी से बल्लियों उछल रहा था। उसे यूं प्रतीत होने लगा था जैसे वह अपने जन्मदिन का उत्सव मनाकर आ रहा हो।

– लुधियाना (पंजाब)

बूझो तो जानें

• राजेश गुजर

पप्पू का स्वेटर ऊन की कौन सी डोरी से बना है आप ही इस उलझन को सुलझाओ।

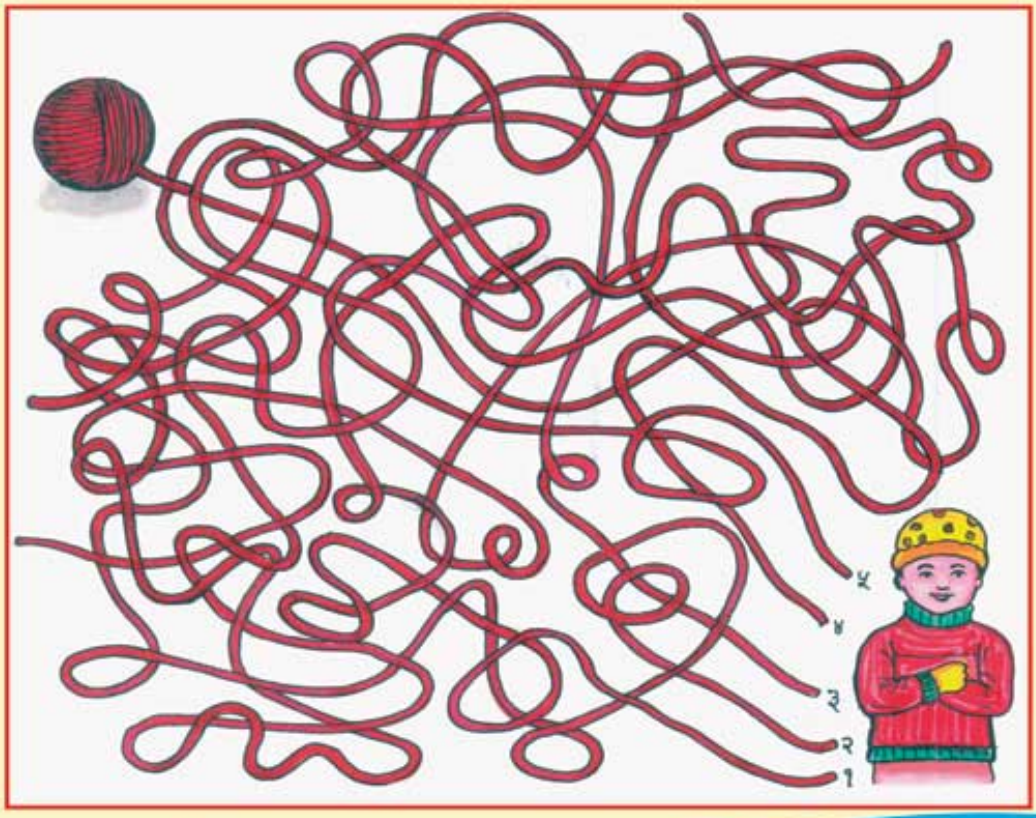

हे! विद्या की देवी

कविता : ओम उपाध्याय

हे, विद्या की देवी हम पर ध्यान दो
हम हैं निपट अज्ञानी हमको ज्ञान दो
सुना है निर्भय होकर जो भी
आपकी पावन शरण में आते
वे प्रकांड पंडित बनकर फिर
अखिल विश्व पर छा जाते
भले बुरे की माँ हमको पहचान दो
हम हैं निपट अज्ञानी हमको ज्ञान दो
कालिदास से हत बुद्धि को
ज्ञान का ऐसा पाठ पढाया
महाकवि के रूप में उन्होंने
जग में फिर नाम कमाया
भिक्षा में शिक्षा का हमको दान दो
हम हैं निपट अज्ञानी हमको ज्ञान दो

– इन्दौर (म.प्र.)

हाथी जी को ठंड लगी

कविता : शुभदा पाण्डेय

हाथी जी को ठंड लगी तो लगे दाँत कटकाने
कहाँ छिपे हो सूरज दादा, आओ तनिक बचाने
नहीं रजाई तोसक, ना ही हीटर की है गर्मी
ना मफलर ना टोपी कोई नहीं है कोई वर्दी
सभी जानवर छिपे गुफा में, मुझे टहलना भाता
गन्ने केले के लालच में, रहा घूमता गाता
पकड़ लिया सर्दी ने अब तो जकड़ गया है सीना
खों-खों कर सिर भन्नाता है, कठिन हो गया जीना
बदली और हवा ने मेरी हालत कर दी खस्ती
कोहरा मेरा शाप बन गया, भूला हेकड़ मस्ती
भालू भेड़ पहन बैठे हैं, ऊनी शाल दुशाले
अदरक वाली चाय भेजना, बच्चे शिलचर वाले

– शिलचर (असम)

धर्मवीर हकीकत

कविता: मदनगोपाल सिंहल

सबसे प्यारा यह जो अपना, पुण्य देश है हिन्दुस्थान।
इसके ही पंजाब प्रान्त में, स्यालाकेट है नगर महान।।
उसमें वर्ष तीन सौ पहिले, रहा एक खत्री परिवार।
जिसके एक-एक प्राणी में, धर्म प्रेम था भरा अपार।।

उस अति पावन खत्री कुल में, छोटा-सा बालक था एक।
जन-जन के प्राणों का प्यारा, नयन सितारा जीवन टेक।।
नाम हकीकत था बालक का, उन्नत मस्तक, नयन विशाल।
गौर-मनोहर-वर्ण, कमल सा कोमल था वह बाल मराल।।

माथे पर घुँघराले काली, केश-राशि बल खाती थी।
देखा चाँद सा मुखड़ा उसका, जननी बलि-बलि जाती थी।।
रोज सवेरे उठता, माँ दुर्गा को शीश झुकाता था।
बस्ता लेकर बड़े चाव से, सदा मदरसे जाता था।।

वहाँ एक लम्बी दाढ़ी के, मुल्ला उसे पढ़ाते थे।
और अनेकों मुस्लिम बच्चे भी पढ़ने को आते थे।।

एक दिवस पढ़ते बच्चों को, किसी कार्यवश सहसा छोड़।
मुल्ला बाहर गये कि सबने खेल-कूद में बदली होड़।

किन्तु हकीकत मिला न उनमें, बस सबने पीटी ताली।
पहले उसको, फिर उसकी दुर्गा माता को दी गाली।।
तमक उठा अपमानित हो कर, वह सच्चा जननी का लाल।
रह न सका चुप दुर्गा माँ को गाली सुन बोला तत्काल।।

'मुझे गालियाँ दिया करो तुम इसका तो कुछ खेद नहीं।
पर दुर्गा माँ और फातिमा में तो काई भेद नहीं।।
फर्क न पड़ता एक चीज में, नाम अलग रख लेने से।
गाली से बातचीत न फातिमा, दुर्गा माँ को देने से।।'

सुनी बात यह मुल्ला ने भी, बाहर से आते सहसा।
'चुप-चुप काफिर' चीख उठा वह बल खाता विषधर जैसा।
चीख उठा तब सभी मदरसा, 'ओ काफिर! बदजुबां गुलाम।
गाली की भाषा में लेता पाक फातिमा का भी नाम।।

मारा पीटा हाकिम तक पहुँचा मुल्ला धक्के देता।
पीछे–पीछे भागी सिसकती माता, रोता हुआ पिता।।
सब घटना सुनकर, हाकिम ने भी पत्थर कर लिया हिया।
'मजहब की तौहीन' बता अपराध मृत्यु का दण्ड दिया।।

सुनकर आज्ञा सभी रो उठे, कातर हा–हाकार उठा।
किन्तु दृश्य यह देख हकीकत का हिन्दुत्व पुकार उठा।।
'अरे! अरे! क्यों रोते हो, क्या कोई हिन्दू मरता है?
कपड़ों के जैसे ही वह तो नित्य नये तन धरता है।'

बार–बार बूढ़ी माता ने, और पिता ने समझाया।
मुल्लाओं ने मौलवियों ने, भी बहकाया, फुसलाया।।
'कर इस्लाम कबूल कि तेरा यह जीवन बच जायेगा।
मन मानी धन दौलत इज्जत, ऊँचा रुतबा पायेगा।।''

किन्तु हकीकत रहा अटल, वह डिगा न अपने निश्चय से।
वह हिन्दू था और पला था, हिन्दू जननी के पय से।।
गये पिता माता सूबा–हकिम तक रोते–चिल्लाते।
किन्तु लौट आये निराश आँखों से आँसू बरसाते।।

गिरी पछाड़ें खाकर माता, बोल सिर को पीटा पिता–
'उससे पहले हम दोनों की– कोई चिन दो हाय चिता।।
किन्तु कौन सुनता हिन्दू की वह मुगलों का शासन था।
हिन्दू को पीड़ा देना ही मुस्लिम जन–मन–रंजन था।।

था बसंत का दिवस, फूल खिलने को थे फुलवारी में।
पर कारा में धर्मवीर था, मरने की तैयारी में।।
हाथों में थी हथकड़ियां, थी पैरों में बेड़ी भारी।
मुख पर राम नाम था सम्मुख थी भगवद् गीता प्यारी।।

सर के ऊपर क्रूर वधिक के लोह खड्ग की छाया थी।
पर होठों पर मुस्काहट थी, उर में प्रभु की माया थी।।
काजी का संकेत हुआ कुछ, सावधान जल्लाद हुआ।
'जय मेरे पावन स्वधर्म की, तीखा सुमधुर नाद हुआ।।

शीश छिटक कर गिरा भूमि पर, बही रक्त की धार प्रखर।
गूँज उठा ऊँचा दिगन्त में, 'धर्म–वीर की जय' का स्वर।।
जब तक अम्बर है, पृथ्वी है, जल से पूर्ण महा–सागर।
बाल हकीकत सदा अमर है, सदा अमर है, सदा अमर।।

और नैना जीत गई

कहानी: गुडविन मसीह

नन्ही मुन्नी बातूनी नैना को उसके पिताजी ने बैठक कक्ष में गुस्से से गुब्बारे की तरह गाल फुलाये बैठे देखा, तो उनकी हँसी छूट गई। वह समझ गये आज फिर नैना किसी बात पर उनसे नाराज होकर बैठी है।

सात वर्षीय नैना की यह आदत है, जब उसको अपने पिता से कोई शिकायत होती है, तो वह ऐसे ही अपना मुँह फुला कर चुपचाप घर के किसी कोने में बैठ जाती है, वर्ना तो उसके पिता के कार्यालय से घर आते ही वह चिड़िया की तरह चहकने लगती है। उसके पिताजी कार्यालय का बैग बाद में रखते हैं, पहले उसकी सुनते हैं। चुलबुली और बातूनी नैना पिताजी के घर में घुसते ही उनसे लिपट जाती है और अपनी बातों की झड़ी लगा देती है। पिताजी, आज हमारे विद्यालय में यह हुआ, आज हमारे विद्यालय में वो हुआ। आज हमारी दीदी ने यह कहा आज हमारी शिक्षिका ने वो कहा। आज मैंने उन को कविता सुनाई आज मुझे मेरे गृहकार्य पर दीदी ने मुझे उत्तम दिया।''

एक के बाद एक टेपरिकार्डर की तरह जब वह चालू हो जाती है, तो फिर रुकने का नाम ही नहीं लेती है। अपनी एक-एक बात पूरी हो जाने के बाद ही वह रुकती है या फिर उसकी माँ यह कहकर उसे चुप कराती है कि बेटा, ''तुम्हारे पिताजी कार्यालय से थककर आये हैं, पहले उन्हें कपड़े बदल करके हाथ-मुँह धोकर थोड़ा आराम कर लेने दो, उसके बाद तुम जितनी चाहों बातें कर लेना। लेकिन नैना कहाँ मानने वाली, कुछ देर के लिए उसकी आवाज पीछे-पीछे जाती है। कपड़े बदलकर मुँह धोने जाते हैं, तो वहाँ भी वह उनके पीछे-पीछे जाती है और अपनी बातें उन्हें सुनाती रहती है।

उसके पिताजी को भी उसकी बातें सुनते रहने की आदत हो गयी। अगर वह चुप हो जाती है, तो उसका मौन उन्हें अखरने लगता है और वह स्वयं उससे बातें करना प्रारंभ कर देते हैं।

उस दिन भी नैना को मौन देखकर उसके पास सोफे पर बैठ गये और उसे देखकर मुस्कराये रहे, फिर स्नेह से उसके गाल थपथपाते हुए बोले, ''अरे, क्या हुआ, आज हमारी गुड़िया रानी ऐसे गाल फुला कर क्यों बैठी है, लगता है हमसे रूठी हुई है?''

पिताजी के इतना कहते ही नैना ने अपना मुँह दूसरी

तरफ घूमा लिया। उसके पिताजी उसे देखकर मुस्कुराये और उठाकर उसके मुँह की तरफ बैठ गये, तो नैना ने फिर अपना मुँह दूसरी तरफ घूमा लिया। उसके पिताजी फिर उठकर उसके मुँह की तरफ आकर बैठ गये, नैना फिर दूसरी तरफ घूम गयी। उसके पिताजी फिर उसके सामने आकर बैठ गये। काफी देर तक ऐसा करते रहने के बाद नैना के पिताजी ने उसके पेट में गुदगुदी करनी शुरु कर दी। पेट में गुदगुदी होते ही नैना खिलखिलाकर हँस पड़ी और नखरे दिखाते हुए बोली, पिताजी आप बहुत खराब हैं, जाइए मुझे आपसे बात नहीं करनी।'' कह कर वह फिर अपने गाल फुला कर बैठ गई।

उसके पिताजी ने हँसे हुए कहा, ''मैंने ऐसी कौन सी गलती कर दी, जिससे मेरी गुड़िया रानी, मुझसे रूठ गई?''

''मैं बताती हूँ कि आपकी गुड़िया रानी आपसे क्यों रूठी हुई है।'' नैना की माँ ने चाय लेकर बैठक कक्ष में आते हुए कहा। उन्होंने चाय मेज पर रखी और आराम से सोफे पर बैठते हुए बोली, नैना के विद्यालय में खेल प्रतियोगिताएँ शुरु होने में अब केवल दस–बारह दिन ही बचे हैं और हमारी नैना ने हमेशा की तरह इस बार भी दौड़ में भाग लेने का मन बना रखा है, क्योंकि आपने इससे वादा किया था कि इस बार आप इसे दौड़ जीतने के लिए इसका खूब अभ्यास करवायेंगे, साथ ही दौड़ जीतने का तरीका भी बतायेंगे, पर आप सिर्फ इससे वायदा करके रह गये, इसका अभ्यास शुरु नहीं करवाया इसलिए ये गुब्बारे की तरह फूली हुई बैठी हैं।''

''ओह तो यह बात है। भई बात तो बिलकुल सही है, गलती तो मैंने सचमुच की है। अब अपनी गलती के लिए अपनी गुड़िया रानी से क्षमा माँगना तो बनता है।'' कहकर नैना के पिताजी ने अपने दोनों हाथों से अपने कान पकड़ लिए और नैना से क्षमा माँगते हुए बोले, ''क्षमा बेटी, क्षमा मुझे क्षमा कर दो।''

उनके इतना कहते ही नैना फिर खिलखिला कर हँस पड़ी और गर्दन घुमाते हुए बोली, ''सिर्फ क्षमा मांगने से काम नही चलेगा, अपने वायदे के अनुसार इस बार विद्यालय में दौड़ जीतने के लिए मुझ अभ्यास तो करवाना होगा तभी क्षमा मिलेगी, वर्ना...।''

''वर्ना, वर्ना सब छोड़ो, मैं आज से बल्कि अभी से अपनी गुड़िया रानी का अभ्यास करवाने का वादा करता हूँ। मैं यह भी वादा करता हूँ कि

प्रतिदिन शाम को कार्यालय से आने के बाद अपनी गुड़िया रानी की दौड़ का अभ्यास करवाऊगाँ, ताकि मेरी गुड़िया रानी दौड़ जीत जाये।''

''फिर अच्छे काम में देरी कैसी, शुभस्य शीघ्रम, फटाफट चाय पीजिए और चलिए बगीचे में अभ्यास करने।'' नैना ने कहा।

''लेकिन हम अकेले नहीं जायेंगे, तुम्हारी माँ भी हमारे साथ चलेंगी। हम दोनों दौड़ लगायेंगे और तुम्हारी माँ हमारी निर्णायक बनेंगी।''

अरे वाह, पिताजी आपने तो मेरे मुँह की बात कह दी। मैं भी कहने वाली थी कि माँ भी हमारे साथ चलेंगी, तो अच्छा लगेगा, क्यों माँ?'' नैना ने अपनी माँ से कहा।

''हाँ मैं भी चल रही हूँ तुम और तुम्हारे पिताजी दौड़ लगायेंगे और मैं निर्णायक बनूंगी।

नैना अपने माता–पिता के साथ कॉलोनी में बने बड़े बगीचे में पहुंच गई और अपने पिताजी के साथ दौड़ लगाने का अभ्यास करने लगी। नैना तेज दौड़ती, उसके पिताजी भी उसके साथ दौड़ते। वह जैसे ही नैना से आगे निकलते वैसे ही अपने दौड़ की गति थोड़ी धीमी कर लेते, फिर नैना जैसे ही उनके पास आती, वैसे ही वह भी अपने दौड़ने की गति थोड़ी तेज कर देते। नैना उन्हें पीछे करने के लिए और तेज, नैना...थोड़ा और तेज। उसकी माँ जितना उसका उत्साह बढ़ातीं, नैना उतनी ही तेज दौड़ती और वह अपने पिताजी को पीछे छोड़कर उनसे दौड़ जीत जाती। अपने पिताजी को दौड़ में हराकर नैना बहुत खुश होती।

धीरे–धीरे नैना के दौड़ने की गति बहुत तेजी ही नहीं हुई बल्कि उसका आत्मविश्वास भी बढ़ गया। वह मन में सोचती, जब वह अपने पिताजी को दौड़ में हरा सकती है तो अपने विद्यालय के बच्चों को क्यों नहीं हरा सकती?'' दस दिनों के लगातार अभ्यास में नैना फर्राटेदार दौड़ लगाने लगी। अब नैना और उसके पिताजी को ही नहीं, उसकी माँ को भी पूरा भरोसा हो गया कि इस बार विद्यालय में होने वाले खेलों में दौड़ उनकी नैना ही जीतेगी।

आखिर वो दिन आ ही गया, जिसका नैना और उसके माता–पिता को आतुरता से इंतजार था। अपने जैसे बारह बच्चों के साथ नैना भी विद्यालय के मैदान में दौड़ के पथ पर दौड़ने के लिए तैयारी खड़ी थी। सभी बच्चों को निर्णायक सीटी बजने और हरी झण्डे दिखाने का इंतजार था। निर्णायक ने सब बच्चों की स्थिति देखी और सीटी बजाकर हरी झण्डी दिखाकर भागने का संकेत दिया। निर्णायक का संकेत पाते ही सब बच्चे सौ मीटर की दौड़ के लिए दौड़ पड़े।

कुछ देर नैना सब बच्चों के साथ दौड़ती रही, कभी बच्चों से आगे निकल जाती, तो कभी पीछे रह जाती, फिर धीरे–धीरे वह सबको पछाड़ती हुई आगे निकल गई। नैना अपने लक्ष्य की ओर दौड़ी जा रही थी। दौड़ देख रहे बच्चों के माता–पिता व विद्यालय के अन्य छात्र–छात्राएँ ताली बजाकर नैना का उत्साह बढ़ा रहे थे। थोड़ी देर में दूसरी लड़की मिताली उसके बराबर में आ गई और नैना का उससे कड़ा मुकाबला होने लगा। मिताली को अपने बराबर आते देख, नैना ने बची–खुची ताकत भी झोंक दी और वह उससे आगे निकल गई।

जितने लोग मैदान में खड़े उस दौड़ को देख रहे थे, सबको पूरा यकीन हो गया कि अब नैना को कोई बच्चा नहीं पछाड़ पायेगा और दोड़ वह ही जीतेगी। नैना के माता–पिता तो बहुत ही खुश हो रहे थे उन्हें भी पूरा विश्वास हो गया था कि अब नैना ही उस दौड़ की विजेता बनेगी।

नैना अपने लक्ष्य से कुछ ही दूर थी, मुश्किल से तीस–पैंतीस कदम दूर कि अचानक वह दौड़ते–दौड़ते रुक गयी। सब चौंक पड़े और नैना को दौड़ने के लिए उकसाने लगे, ''क्या हुआ नैना...दौड़ो...रुको नहीं नैना दोड़ो...दौड़ो नैना...दौड़ो....थोड़ा सा रह गया है, हिम्मत मत हारो नैना, एक बार हिम्मत कर लो दौड़ने की, तुम

जीत रही हो नैना...नैना दौड़ो'' मगर नैना सबकी अनसुनी करके वहीं अपने घुटनों पर हाथ रखकर और नीचे सिर झुका कर खड़ी रही। इसी बीच उसके पीछे आ रही मिताली आगे निकल गई और जैसे ही मिताली लक्ष्य के करीब पहुँची नैना भी दौड़ पड़ी। सबके फूल से खिले मुखड़े मुर्झा गए। निराश मन से सभी आपस में कहने लगे, अच्छी खासी प्रथम आ जाती, पर पता नहीं क्या हो गया, क्यों रुक गई?'' तो किसी ने कहा, ''छोटी बच्ची है, दौड़ते-दौड़ते थक गयी होगी, चलो कोई बात नहीं प्रथम न सही, द्वितीय तो आ ही गयी।''

नैना को मालूम था कि उसके माता-पिता को उसके अचानक रुक जाने से बहुत निराशा हुई होगी, फिर भी वह दौड़ कर अपने माता-पिता से लिपट गई और बोली, ''माँ-पिताजी क्षमा करें इस बार न सही, अगली बार मैं प्रथम अवश्य आ जाऊँगी।''

''तुम्हारी बात सही है, लेकिन बेटा, तुम भागते-भागते अचानक रुक क्यों गई थीं, क्या हो गया था तुम्हें?'' नैना के पिताजी ने पूछा।

''पिताजी, मैं रुकती नहीं तो आज मिताली प्रथम नही आती और अगर वह प्रथम नहीं आती तो आज उसकी माताजी की दवा रह जाती।''

''क्या मतलब है तुम्हार? नैना के माता-पिता ने चौंकते हुए कहा।

''पिताजी, मिताली की माँ बीमार हैं। उसके पिताजी भी नहीं है, उसकी माँ छोटी-सी नौकरी करके मिताली को पढाती है।''

''लेकिन तुम्हें यह सब कैसे मालूम हुआ?'' नैना की माँ ने पूछा।

''माँ मिताली जब मेरे साथ भाग रही थी, तो वह भगवान से प्रार्थना कर रही थी भगवान कृपया आज मुझे इस दौड़ मे प्रथम पुरस्कार दिलवा देना, पुरस्कार में मिले पैसों से मै अपनी माँ की दवाई लाऊँगी, मेरी माँ बहुत बीमार हैं। बस, मिताली की बात सुनकर मेरा मन भर आया और मुझे आपकी बात याद आ गई, जो आपने मुझे दौड़ का अभ्यास करवाते समय माँ से बोली थी।''

''मेरी बात? मैंने क्या बोला था तुम्हारी माँ से?'' उसके पिताजी ने चौंकते हुए उससे कहा।

''पिताजी दौड़ का अभ्यास करवाते समय आप बार-बार मुझसे दौड़ हार जाते थे। मुझे यह तो मालूम था कि आप जानबूझ कर मुझसे दौड़ हार जाते हो, पर यह नहीं मालूम था कि मुझसे दौड़ में हारने के पीछे आपका क्या उद्देश्य था? यह बात मुझे उस दिन मालूम हुई जिस दिन माँ ने आपसे कहा था कि , ''आप बार-बार जानबूझ कर नैना से दौड़ हार जाते हैं। ऐसा क्यों करते हैं? तो आपने माँ से कहा था 'अगर मेरे हारने से मेरी बेटी की जीत का हौसला बढ़ जाये इससे बड़ी खुशी की बात मेरे लिए और क्या हो सकती है।' उसी समय आपने माँ से यह भी कहा था, कि कभी-कभी हारते हुए व्यक्ति को जिताने से उसका कोई लाभ हो रहा हो, तो हार जाना ही अच्छा होता है। पिताजी मैंने आपकी और माँ की बात सुन ली थी, लेकिन आपकी बात पर मैंने भी जानबूझ कर कोई प्रतिक्रिया नहीं की थी।

बस पिताजी मैंने भी यही सोचा, अगर मेरे हार जाने से मिताली जीत जायेगी, तो एक तो उसकी माँ को दवाई मिल जायेगी और दूसरी बात मिताली का भरोसा भगवान पर अटल हो जाएगा। उसे ऐसा लगेगा, जैसे भगवान ने उसकी प्रर्थना सुन ली और वह दौड़ जीत गई। पिताजी कृपया यह बात किसी भी तरह मिताली को पता नहीं चलनी चाहिए, कि मैं जानबूझ कर उससे दौड़ हारी हूँ। नहीं तो उसे प्रसन्नता नहीं होगी, जो प्रसन्नता अब उसे मिलने वाली है।''

नैना की बात सुनकर उसके माँ-पिताजी एकदम भावुक हो गये। आनंद से उनकी आँखें छलक आयीं। दोनों ने नैना को चिपटा लिया और बोले, बेटा सही अर्थों में तो यह दौड़ तुम्हीं ने जीती है।''

– बरेली (उ.प्र.)

॥ ११ फरवरी जयंती ॥

शहीद बाबा तिलका मांझी

आलेखः अंकूश्री

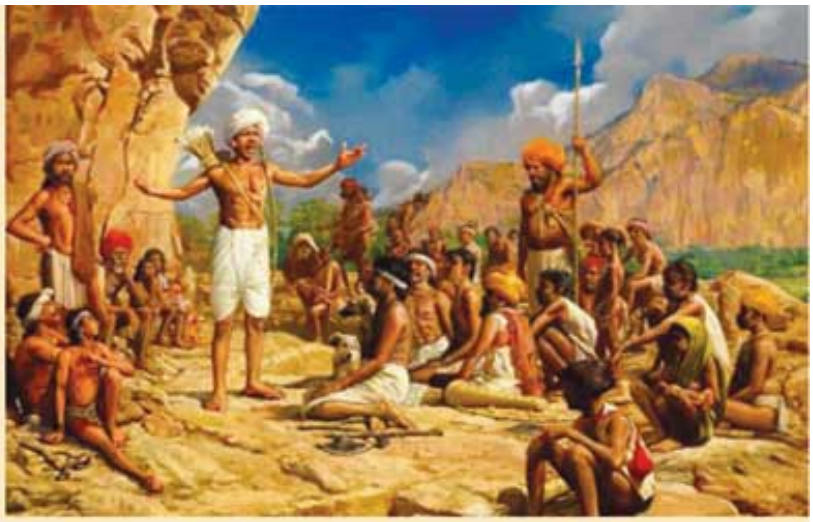

भागलपुर प्रमण्डल क्षेत्र में अंग्रेजों की बढ़ती हुकूमत से लोग त्रस्त थे। गरीब हिन्दू और मुसलमान बाबा तिलका मांझी के नेतृत्व में विद्रोह पर उतारू हो गये। बाबा तिलका मांझी ने धरती की स्वतंत्रता के लिए जान की बाजी लगा कर अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ाई लड़ी थी। यह लड़ाई सन् १७७१ से १७८४ तक चली थी। इन्हें भारतीय स्वाधीनता संग्राम का प्रथम शहीद कहा जाता है।

सन् १७५७ में पलासी की लड़ाई जीतने के बाद आगस्टस क्लीवलैण्ड को १७७३ में राजमहल का सहायक प्रशासनिक अधिकारी बनाया गया। १७७६ में उसे कलेक्टर के पद पर प्रोन्नति देकर उसका मुख्यालय भागलपुर कर दिया गया। उसने कई बार राजमहल के पहाड़ी क्षेत्र में अपनी सेना भेजी, मगर कोई लाभ नहीं हुआ। जंगल तराई (संताल परगना, भागलपुर और मुंगेर का दक्षिणी भाग) अंग्रेजों के अधीन नहीं हो पाया था। उस क्षेत्र के संतालों ने अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ खुली बगावत कर दी। वे अपनी पुरानी 'परगना' एवं 'मांझी' प्रथा को बरकरार रखना चाहते थे। कप्तान जेम्स ब्राउन १७७४ से १७७८ तक पहाड़ी सेना का अधिकारी था। वह संताल विद्रोह दबाने में लगा रहा। इलाके में शांति व्यवस्था बरकरार रखने के लिए उसने परगना एवं मांझी प्रथा को मान्यता देने की राय दी। आगस्टस क्लीवलैण्ड ने जेम्स ब्राउन की सिफारिश पर 'सरदार', 'परगना' और 'मांझी' प्रथा को मान्यता दे दी। उसने सरदार, नायब एवं मांझी को दस रुपये से दो रुपये माहवार वेतन देकर अपना एजेंट बनाने की साजिश की। मगर अंग्रेजों की साजिश संताल समझ गये।

तत्पश्चात् अंग्रेजों ने पहाड़िया जनजाति को अपने प्रभाव में लेकर उनकी एक सेना बनाई। उसमें १३०० सैनिक थे। पहाड़िया क्लीवलैण्ड को 'चिलीमिली साहेब' कहते थे। पहाड़िया में जो अंग्रेज विरोधी थे, वे अंग्रेज सेना में भरती नहीं थे। पहाड़िया की मदद से अंग्रेजों ने संतालों के विरुद्ध लड़ाई लड़ी। इससे उनका विरोध बढ़ता गया। जो भी विद्रोही पकड़े जाते थे, उन्हें भागलपुर ले जाकर उन पर जुल्म ढाए जाते थे। पेड़ से लटका कर उन पर कोड़े बरसाये जाते थे। नेताओं को घोड़े से बांध कर घसीटा जाता था।

संतालों को देख कर आगस्टस क्लीवलैण्ड की आँखों में खून टपकने लगता था। वह संताली नेताओं का सिर टोकरियों में भर कर मंगवाया करता था। उसके जुल्म में भारतीयता रोने लगी थी। देशभक्तों का हृदय करुण क्रन्दन करने लगता था और उनका खून गरमाए बिना नहीं रहता था। अंग्रेजों का शोषण चरम पर था।

बाबा तिलका मांझी ने अंग्रेजों की कहर का प्रतिकार करने के लिए गांठ बांध ली। बनैयाजोर नामक एक छोटे से गांव में सन् १७७१ में मुक्ति आंदोलन शुरू हुआ। यहां फैली विद्रोह की आग भागलपुर और संताल परगना में फैली ही, उसने पूरे देश में अंग्रेजों का शासन प्रभावित कर दिया। कहते हैं स्वतंत्रता की इस लड़ाई में ३८८ व्यक्ति शहीद हुए थे तथा बाबा तिलका मांझी ने अपनी तीर से आगस्टस क्लीवलैण्ड को मार कर ब्रिटिश शासन के एक महत्वपूर्ण हिस्से को तोड़ दिया था।

भागलपुर के निकट सुलतानगंज थाना के अंतर्गत तिलकपुर गांव में बाबा तिलका मांझी का जन्म हुआ था।

संताल परिवार में ११ फरवरी, १७५० को जन्में तिलका मांझी बचपन से ही कुशाग्र और दूरदर्शी थे। वे अच्छे तीरंदाज और ढेलबांस चलाने में माहिर थे। वे कुश्ती लड़ते थे। कुछ बड़ा होते ही उन्होंने अंग्रेजी शासन के विरोध में कमर कस ली।

युवा तिलका मांझी के नेतृत्व में हिन्दू, मुसलमान और आदिवासी संगठित होने लगे। उनका विचार था कि विदेशी ताकत हमें मिलकर नहीं रहने देंगी, इसलिए हम मिलकर उस ताकत को उखाड़ फेंके। इसी विचार से उन्होंने स्वतंत्रता की लड़ाई शुरू की। वे गुप्त बैठकें किया करते थे। भागलपुर क्षेत्र के वे बड़े संताल सरदार थे। संताल समाज में मांझी वैयसी, परगना वैयसी तथा ल–बिर वैयसी की व्यवस्था थी। मांझी वैयसी गांव भर के लिए, परगना वैयसी पूरे परगना के लिए और ल–बिर वैयसी पूरे राज्य के लिए होती थी। बाबा तिलका मांझी की परगना वैयसी आदमपुर चौक के पास होती थी। वहां आदिवासियों की आबादी घनी थी। पूरा क्षेत्र जंगलों से भरा था। वहां ताड़ और खजूर के पेड़ों की भरमार थी। इसमें संताल अपनी उन्नति की बात सोचते थे और आपसी तथा बाहरी झगड़ों का निपटारा किया करते थे। दोषी व्यक्तियों को उचित दंड भी दिया जाता था।

कहा जाता है कि तिलका मांझी को ईश्वर (ठाकुर) और महादेव (मंरागुरु) से शक्ति प्राप्त थी। सभी जातियों, धर्मों और वर्गों के बीच वे श्रद्धा के पात्र बन गये। उनके बारे में एक कहावत प्रचलित थी कि वे जो कह देते थे, वह हो जाता था। यह भी कहा जाता है कि तेलियागढ़ी मारगो दर्दे और कहलगांव में गंगा के किनारे अंग्रेजों का खजाना लूट कर उसे गरीबों में बांट दिया करते थे।

विदेशी शासन की समाप्ती के लिए दृढ संकल्पित तिलका मांझी अपनी जान हथेली पर रखकर विद्रोह पर उतारू हो गये। मुंगेर, भागलपुर और संताल परगना के पहाड़ी इलाकों में अनेक लड़ाइयां हुई। एक तरफ तिलका मांझी की जनशक्ति थी तो दूसरी तरफ क्लीवलैण्ड, सर आयर कूट एवं पहाड़िया सेनापति जाउराह के नेतृत्व में ब्रिटिश सेना थी। हर लड़ाई में तिलका मांझी को विजय मिलती रही।

सन् १७८४ में तिलका मांझी ने भागलपुर में अंग्रेजी सेना पर आक्रमण किया। एक ताड़ पेड़ के ऊपर से उन्होंने घोड़े पर जा रहे अगस्टस क्लीवलैण्ड को तीर मार दिया। यह घटना १३ जनवरी १७८४ की है। क्लीवलैण्ड मारा गया। इसके बाद अंग्रेजी सेना में आंतक फैल गया। भागलपुर में स्थायी रूप से कोई अंग्रेज शासक नहीं रह सका। ७ वर्षों में ७ अंग्रेज पदाधिकारी यहां आये और गये।

उधर तिलका मांझी की संगठित जन सेना अंग्रेजी सेना को पस्त समझ कर जश्न मनाने लगी। उसी रात सर आयर कूट और पहाड़िया सेनापति जाउराह ने चुपके से धावा बोल दिया। तिलका मांझी के बहुत से लोग मारे गए। तिलका मांझी वहां से निकल भागे। उन्होंने सुलतानगंज की पहाड़ियों में शरण ले ली। वहीं वे आगे की योजना बना रहे थे।

ब्रिटिश और पहाड़िया सेना से वे महीनों लोहा लेते रहे। विदेशी हुकूमत ने पहाड़ों की घेराबंदी शुरु कर दी। बिना राशन पानी के इनकी जन सेना परेशान होने लगी। तब तिलका मांझी ने गुरिल्ला युद्ध शुरु किया। उसी के दौरान वे धोखे से पकड़े गए। इन्हें घोड़े से बांधकर दौड़ाया गया तथा भागलपुर की सड़कों पर घसीटा गया। इतना सब होने के बाजूद वीर पुरुष बाबा तिलका मांझी जीवित ही रह गये। उसके बाद अंग्रेजों ने बेरहमीपूर्वक उन्हें एक बरगद के पेड़ से कांटी ठोक कर फांसी पर लटका दिया। ब्रिटिश हुकूमत को दहला देने वाले इस वीर योद्धा ने फांसी के फंदे को चूम कर उस पर झूल गए।

भागलपुर शहर में जिस स्थान पर बाबा तिलका मांझी को फांसी दी गई थी, आजाद भारत में वहां एक स्मारक बना दिया है। तिलका मांझी चौक के नाम से प्रख्यात इस स्थल पर तीर कमान ताने बाबा तिलका मांझी की मूर्ति स्थापित है। इनके नाम पर पुलिस लाईन के पूरब और हवाई अड्डा तथा सेन्ट्रल जेल के पश्चिम में तिलका मांझी मुहल्ला स्थापित है।

– रांची (बिहार)

|| पं. दीनदयाल उपाध्याय पुण्यतिथि : ११ फरवरी ||

डाकू लौट गए

कहानी: विष्णुप्रसाद चतुर्वेदी

घटना उस समय की है जब देश आजाद नहीं हुआ था। उन दिनों पुलिस का प्रमुख कार्य अंग्रेजी राज की रक्षा करना था। बेरोजगारी से परेशान कई लोग चोरी व डकैती करने लगे थे। आप चोर का अर्थ जानते हैं। हो सकता है डाकू शब्द से परिचित नहीं हो। मैं ही स्पष्ट कर देता हूँ। चोर छुप कर रात में या सूने घर से समान चुराकर ले जाते हैं। डाकू दिन के समय सबके सामने, अपनी ताकत के बल पर धन छीन कर ले जाते थे। डाकू स्वाभिमानी होते हैं। चोरी करने को घटिया काम मानते हैं। धनवानों को लूटना बहादुरी मानते हैं।

राजस्थान के गांव के घर में डाकू घुस आए थे। घर में ७ वर्षीय बालक दीनू के साथ उसकी मामी ही थी। दीनू ने ठीक से बोलना नहीं सीखा था। उसके पिता का देहान्त हो गया था। पिता की मृत्यु के बाद घर में दीनू के व उसकी मां के साथ बुरा व्यवहार होने लगा था। माँ ने कुछ दिन तो सहन किया, जब बात आगे बढ़ी तो दीनू व उसके छोटे भाई शिबू को लेकर अपने पिता के घर आ गई थी। दीनू के नाना उन दिनों, गुलाबी शहर जयपुर के समीप, एक छोटे से रेलवे स्टेशन धानक्या पर नौकरी कर रहे थे।

धानक्या में भी दीनू के परिवार को सुख नहीं मिला। दीनू के दो मामाओं की अचानक मृत्यु हो गई थी। पुत्रों की अचानक हुई मौत के कारण दीनू के नाना बहुत दुखी रहने लगे थे। कुछ समय बाद नाना रेलवे की नौकरी से सेवानिवृत्त होने पर, दीनू के परिवार की परेशानी और बढ़ गई थी। मजबूर हो दीनू का परिवार अपने ननिहाल के गांव चला गया था।

दिन प्रतिदिन की परेशानियाँ ने दीनू की माँ को बहुत निराश कर दिया था। वह बीमार रहने लगी थी। कुछ दिन बाद दीनू की माँ भी गुजर गई। अब दीनू व उसका छोटा भाई शिबू पूरी तरह बेसहारा हो गए थे। ननिहाल के घर में रहना दीनू के लिए संभव नहीं था। दीनू अपने भाई शिबू के साथ मामा के घर गंगापुर आ गया था।

गंगापुर आने पर दीनू को कुछ राहत मिली। दीनू की मामी का स्वभाव बहुत अच्छा था। मामी दीनू व उसे भाई शिबू का बहुत ध्यान रखती थी। उनको किसी बात की कमी नहीं होने देती थी। सुख से कुछ ही दिन बीते थे कि दुःख एक बार फिर दीनू के जीवन में आ पहुँचा। दीनू के छोटे भाई शिबू को चेचक का रोग हो गया। दीनू ने अपने भाई का बहुत ध्यान रखा मगर शिबू कमजोर होता गया। एक दिन शिबू, दीनू को छोड़ माता पिता के पास चला

गया। छोटे भाई शिबू की मौत के बाद दीनू दुनिया में अकेला रह गया था।

एक दिन अचानक डाकूओं ने उनके घर पर आक्रमण कर दिया।

घर में घुसते ही एक डाकू ने दीनू की मामी के सीने पर बन्दूक तान दी। दूसरे ने दीनू को पकड़ लिया था। दीनू ने छूटने की कोशिश की तो डाकू ने उसको नीचे गिराकर सीने पर पैर रख दिया था। बालक दीनू में इतनी ताकत नहीं थी कि डाकू का मुकाबला कर सके। उसने हिम्मत नहीं हारी थी। वह मुसीबत से बचने का उपाय सोचता रहा।

''ऐ औरत! बता गहने व धन कहां रखा हैं?'' डाकू ने बंदूक को दीनू की मामी के सीने में गड़ाते हुए कहा।

''मैं सच कह रही हूँ हमारे पास धन नहीं हैं। दीनू की मामी ने भय से कांपते हुए कहा।

''मैं एक बात कहूं डाकू जी' दीनू बोला।

''बच्चे झूठ नहीं बोलते। हाँ हाँ तू बता कहां है धन?'' डाकू ने मामी से ध्यान हटाकर दीनू से प्रश्न किया।

''मैं तो यह जानना चाहता हूं कि आप कैसे डाकू हैं? दीनू ने डाकू के प्रश्न का उत्तर नहीं देकर उसी से प्रश्न कर दिया था। दीनू का प्रश्न सुन डाकू सपकपा गया। ऐसा प्रश्न तो आज तक किसी ने नहीं पूछा था। डाकू से कोई उत्तर देते नहीं बन रहा था।

''क्या हुआ इतनी देर क्यों लग रही है?'' डाकू सरदार ने अन्दर आकर पूछा। सरदार अब तक घर के बाहर पहरा दे रहा था।

''सरदार यह बच्चा पूछ रहा हैं कि हम लोग कैसे डाकू हैं?'' दीनू के सीने पर से पैर हटाते हुए डाकू ने सरदार को बताया।

''ऐ टाबर! कांई मतलब हैं थारो?' चालाकी करवा की हिम्मत करी तो सारी गोलियां थारे छाती रे पार कर दूलां।'' डाकू सरदार ने बंदूक को दीनू की और तानते हुए कहा।

''मैं कोई चालाकी नहीं कर रहा हूं सरदार! मैं तो यह कह रहा हूं कि मैंने डाकुओं की जितनी भी कहानियां सुनी उनमें डाकू धनवालों को, बलवानों को लूटते हैं। आप लोग कैसे डाकू हैं जो गरीबों को लूट रहे हैं। एक कमजोर औरत व बच्चे पर बंदूक तान रहे हैं। आपको हमारी गरीबी पर विश्वास नहीं हो तो हमारे आटे के डिब्बे में झांक कर देखिए। सबका पेट भर सके इतनी रोटियां भी आज नहीं बन सकेगी।'' बालक दीनू ने साहस के साथ कहा।

डाकू सरदार ने जेब में हाथ डालकर कुछ नोट निकाले और बालक दीनू को देते हुए कहा ले राखले, एक महिना रा आटा दाल तो आजावेला। तू ठीक ही कहरियो, डाकू गरिबां ने कोनी लूटे।'' इतना कह कर डाकू सरदार घर से बाहर निकल गया। उसके साथी डाकू भी उसके पीछे चल दिए। वह साहसी बालक दीनू आगे जाकर पंडित दीनदयाल उपाध्याय के रूप में प्रसिद्ध हुआ।

– पाली (राज.)

पंजीयन क्र.2672

संस्था कोड- 362068

सरस्वती शिशु मंदिर/उच्चतर माध्यमिक विद्यालय

अमरकण्टक जिला-अनूपपुर (म.प्र.)

फोन: 07629-269413

कक्षा षष्ठ से द्वादश तक डे बोर्डिंग व्यवस्था (भैया/बहिनों दोनों के लिए)

कक्षा षष्ठ से द्वादश तक आवासीय व्यवस्था (केवल भैयाओं के लिए)

	अध्यक्ष	9424334035
सम्पर्क सूत्र	व्यवस्थापक	9424334020
	प्राचार्य	9407341131

विशेषताएँ

०१.प्राकृतिक सुरम्य वातावरण में ७.४ एकड़ भूमि में स्थित आवासीय भवन एवं विद्यालय परिसर।
०२. म.प्र. शासन से मान्यता प्राप्त।
०३. कक्षा पंच से द्वादश तक।
०४.सर्व सुविधायुक्त आवासीय छात्रावास।
०५. शहर के कोलाहल से दूर सुरम्य स्थल।
०६.कम्प्यूटर शिक्षा की व्यवस्था।
०७.सरस्वती शिक्षा परिषद् द्वारा प्रदेश के खेल मॉडल एवं अखिल भारतीय योग केन्द्र के रूप में विकसित करने की योजना।
०८.अनुभवी एवं योग्य आचार्यों द्वारा अध्यापन।
०९. सत्र २०१९-२० से कला एवं कृषि विज्ञान संचालित।
१०. जीव विज्ञान, भौतिकी एवं रसायन की पृथक-पृथक आधुनिक प्रयोगशालायें।

अमरकंटक आवासीय विद्यापीठ

धूनीपानी मार्ग, जमुनादादर अमरकंटक, जिला अनूपपुर (म.प्र.)

सरस्वती विद्यापीठ

(आवासीय विद्यालय)

AN ISO 9001:2008 Certified

पोस्ट बाक्स नं. 10, उतैली, सतना मो. 7024249850 फोन : (07672) 250073, 250870

विशेषताएँ

●माध्यमिक शिक्षा मण्डल द्वारा आयोजित हाई स्कूल प्रमाण पत्र परीक्षा में 2005 से लगातार प्रदेश की विद्यालयशः प्रावीण्य सूची में स्थान प्राप्त। ●म.प्र. शासन से मान्यता प्राप्त (विद्या भारती से सम्बद्ध)। ●कक्षा 6 वीं से 12 वीं तक (विज्ञान, गणित एवं वाणिज्य संकाय)। ●सीसी टी युक्त परिसर। ●सर्व सुविधायुक्त आवासीय छात्रावास। ●अन्तर्राष्ट्रीय मानक का धावन पथ। ●विज्ञान मंडप (म.प्र. के विद्यालयों में एकमात्र)। ●कम्प्यूटर शिक्षा की व्यवस्था। ●अंग्रेजी संभाषण की सुव्यवस्था। ●प्रतियोगी परीक्षाओं की सुविधा – राज्य स्तरीय साईंस ऑलम्पियाड, राष्ट्रीय साईंस ओलम्पियाड, राष्ट्रीय गणित ओलम्पियाड, राष्ट्रीय अंग्रेजी ओलम्पियाड, एन.टी.एस.ई., एन.एस.टी.एस.ई., एन.डी.ए., किशोर वैज्ञानिक प्रोत्साहन योजना (के.व्ही.पी.वाई.), पी.पी.टी., आई.आई.टी.जे.ई.ई. मेन्स, ए.आई.पी.एम.टी., सी.ए., सी.पी.टी. (कामर्स), आई.सी.ए.आर. (सभी समूह), आर.आई.एम.सी.(7वीं)। ●भव्य पुस्तकालय/वाचनालय। ●सरस्वती शिक्षा परिषद द्वारा प्रदेश के खेल मॉडल के रूप में विकसित। ●अनुभवी एवं योग्य शिक्षकों द्वारा अध्यापन। ●एल.सी.डी. प्रोजेक्टर द्वारा शिक्षण की सुविधा। ●2006, 2008, एवं 2010 में मध्यप्रदेश की विद्यालयशः प्रावीण्य सूची में प्रथम स्थान। 2009, 2010, एवं 2011 में माननीय मुख्यमंत्री द्वारा सम्मान एवं प्रशंसा पत्र प्राप्त। 2014 में प्रदेश की प्रवीण्य सूची में दसवीं में छठवाँ स्थान एवं बारहवीं में तीसरा स्थान। शिवांक तिवारी 2018 मा. शि. मं. म. प्र. की सूची में 7 वाँ स्थान। ●अत्याधुनिक स्मार्ट क्लासेस कम्प्यूटर द्वारा शिक्षण की सुविधा। ●भौतिक शास्त्र, रसायन शास्त्र, जीव विज्ञान एवं आई.पी. की सुव्यवस्थित प्रयोगशालाएँ। संस्था में ए.टी.एल. लैब की स्थापना। ●विषय विशेषज्ञ एवं प्रतिष्ठित कोचिंग सेन्टर से मार्गदर्शन दिलाना। ●कैरियर काउन्सिलिंग की समुचित व्यवस्था।

दादाजी की मदद

चित्रकथा
देवांशु वत्स

फिरंगी को चेतावनी

प्रातःकाल की सुखनिद्रा अभी पूरी भी न हुई थी कि राजापुर के हर सम्पन्न व्यापारी और साहूकार के द्वार पर मराठा सैनिकों की एक टुकड़ी आ खड़ी हुई और यह राजापुर है अंग्रेजों की व्यापारिक कोठी।

सैनिकों की ओर से हर व्यापारी और साहूकार को सूचना दी गयी– ''शिवाजी महाराज आये हुए हैं और नगर के बाहर शिविर में है। आप लोगों को तुरंत उनके सम्मुख उपस्थित होना है।''

व्यापारी और साहूकार हाथ जोड़कर महाराज के सामने खड़े हुए। शिवाजी ने उनसे अनुरोधपूर्ण किन्तु दृढ़ स्वर में कहा–''आप इस देश के पुत्र हैं। मैं देश कार्य में लगा हूं। आशा है कि आप इस पवित्र कार्य के लिए धन देकर सहायता करेंगे। कितना दें, वह मैं नहीं बताऊंगा। यह निर्णय आपको ही करना है।''

थोड़े ही समय बाद, शिविर में सोना, चांदी, जवाहरात आदि भारी मात्रा में जमा हो गए।

लेकिन अभी और महत्व का कार्य तो शेष ही था। छत्रपति ने अपने सैनिक अधिकारियों को आदेश दिया– ''जाओ, प्रत्येक अंग्रेज अधिकारी को हथकड़ियां डालकर ले आओ। फिर अंग्रेजों की सारी गोदामों का माल निकाल लो। इसके बाद, दीवारों को नींव से उखाड़ फेंको और उन स्थानों की आदमी–आदमी भर गहरी जमीन खोद डालो, ताकि कोई धन छिपकर बचा न रह जाय।

सेना ने आदेश के अनुसार कार्य पूरा कर दिया। इतनी बड़ी सम्पदा शिविर पर लाई गई कि देखने वालों को आश्चर्य हो।

१५ मार्च १६६१ को घोड़ों और बैलगाड़ियों में लाद कर सारा धन स्वराज्य की ओर रवाना किया गया।

*****

बासोटा और सोनगढ़ नामक दो दुर्गों में बंदी अंग्रेजों की आँखें दुर्ग की खिड़की से दूर क्षितिज में अपनों को छुडाने आती अंग्रेजी सेना को ढूंढती थक गईं। लेकिन कहीं किसी का पता तक नहीं। रिचर्ड नेपियर और सेमुअर बर्नार्ड नाम के दो अंग्रेज अधिकारी बंदी अवस्था में मर गये। उनके सबसे बड़े अधिकारी हेनरी रेविंग्टन ने ईस्ट इंडिया कंपनी के अध्यक्ष एण्ड यूज को पत्र लिखा कि उसे मुक्त करायें, एण्ड यूज ने शिवाजी महाराज को पत्र लिखा। छात्रपति के राजदूत सोमनाथ का उत्तर था– ''रिहाई की शर्तें हैं कि पन्हालगढ़ के घेरे में हुई हमारी क्षति का मुआवजा चुका दिया जाय और पन्हालगढ़ के घेरे के पहले हमारे दूत दारोजी के साथ जो वार्ता हो रही थी

उसे पूरा किया जाय, जिसमें हमने जंजीरा के सिद्दी के खिलाफ आपकी बड़ी तोपों की मदद के लिए कहा था।''

एण्ड यूज के उत्तर में शर्तों की पूर्ति का कोई संकेत न था। पत्र आते रहे, शिवाजी महाराज की ओर से कोई उत्तर नहीं दिया गया।

एक दिन रेविंग्टन ने महाराज से भेंट की अनुमति चाही, जो स्वीकार हुई। रेविंग्टन धीरे-धीरे नम्रता से आया और झुककर प्रणाम किया। फिर कहा- ''महाराज मैं बीमार हूं। मुझे पेरोल पर जानी की इजाजत दें। मैं आपकी शर्तों को पूरा कराने के लिए आखिरी कोशिश करना चाहता हूं। ताकि अपने को और अपने देशवासियों को रिहा करा सकूं। मैं वचन देता हूं कि मैं लौट आऊंगा।''

महाराज ने क्षण भर सोचा और स्वीकृति दे दी।

थोड़ी ही दिनों बाद शिवाजी को एक संदेश मिला- ''रेविंग्टन अपने प्रयास में विफल होने के बाद, बीमारी के कारण मर गया।''

शेष बंदियों के पत्र भी एण्ड यूज के पास पहुंचते रहे और एण्ड यूज के पत्र छत्रपति को मिलते रहे, लेकिन कोई उत्तर नहीं। आखिर थक कर एण्ड यूज ने बंदियों को लिखा- ''तुम्हें तुम्हारे कर्मों की सजा मिली है। व्यापारी का काम है व्यापार करना, लेकिन तुम शिवाजी के राज्य में गोले बरसाने पहुंच गये। तुम लोगों ने मनमानी की और ठीक ही सजा पायी।''

अन्त में १५ फरवरी १६६३ को छत्रपति ने फिरंगियों को रिहा कर दिया।

सभी अंग्रेज बंदी आभार-नत हो हाथ जोड़कर खड़े हुए। शिवाजी महाराज ने छोटी सी चेतावनी दी- ''जाओ, याद रखो और अपने देशवासियों से कह दो- व्यापार का अर्थ व्यापार मात्र है।''

-

संस्कृति प्रश्नमाला

- *भरत के लिए अयोध्या का राज्य मांगने के बाद महारानी कैकेयी ने दूसरा वर क्या माँगा?*
- *पाण्डव नकुल और सहदेव की जन्मदायिनी माता कौन थीं?*
- *ढाई हजार साल पहले हुए राजा कुरुष् किस देश के सम्राट थे?*
- *अपने देश में स्थित पवित्र ज्योतिर्लिंगों की संख्या कितनी है?*
- *प्रसिद्ध गणितज्ञ बोधायन किस मत का पालन करने वाले थे?*
- *विजय नगर साम्राज्य के पहले किस राजवंश का पूरे दक्षिण भारत में प्रभुत्व था?*
- *जिन्हें न्यूटन के गति के नियम कहा जात है उनका वर्णन महर्षि कणाद के किस प्राचीन ग्रंथ में है?*
- *प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में बहादुर शाह जफर को अंग्रेजों से संघर्ष के लिये करोड़ों रुपये किसने दिये थे?*
- *मेवाड़ के वे शासक कौन थे जिन्होंने औरंगजेब का मानमर्दन किया?*
- *सर्वोच्च न्यायालय ने हाल ही में केरल सरकार को एक वैज्ञानिक को झूठे आरोपों में फँसाने के लिए पचास लाख रु. का हर्जाना देने का आदेश दिया है। 'इसरो' के वे पूर्व वैज्ञानिक कौन हैं?*

(उत्तर इसी अंक में) (साभार : पाथेय कण)

ये हैं विशाल स्तनपायी प्राणी

सचित्र जानकारी- संकेत गोस्वामी

नीली ह्वेल पृथ्वी पर अब तक ज्ञात सबसे विशाल स्तनपायी प्राणी है. और यही दुनिया की सबसे वजनी प्राणी भी है. एक अकेली नीली ह्वेल 140 टन वजन की होती है.

यूं कहा जा सकता है कि नीली ह्वेल, अफ्रीकी हाथी से बीस गुणा भारी और औसत वजन के आदमी से 2000 गुणा भारी होती है.

भूमि पर पाये जाने वाला सबसे विशाल स्तनपायी प्राणी अफ्रीकी हाथी है. एक वयस्क अफ्रीकी हाथी 13 फीट ऊंचा और अधिकतम 10 से 12 टन वजनी हो सकता है.

गर्दन और टांगों की मदद से पृथ्वी का सबसे लम्बा स्तनपायी प्राणी जिराफ है. यह आमतौर पर 17 फीट ऊंचा हो सकता है.

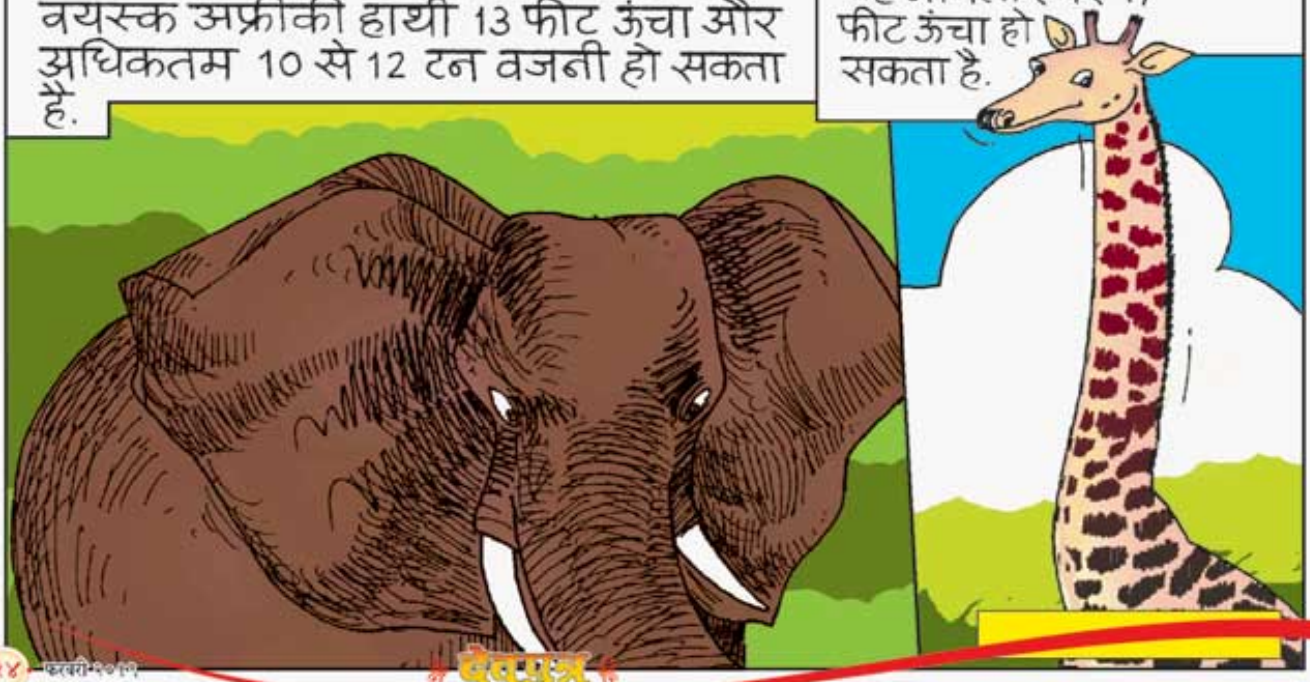

उड़ने वाला विशाल स्तनपायी प्राणी है 'बिस्मार्क फ्लाइंग फॉक्स.' यानी न्यू गुएना की चमगादड़. यह सिर से पैर तक 18 इंच लम्बी होती है लेकिन इसके पंखों का फैलाव साढ़े पांच फीट तक होता है.

सरल और सज्जन एप्स में सबसे विशाल स्तनपायी प्राणी है अफ्रीका का पहाड़ी गोरिल्ला. जो खड़े होने पर 5 फीट 9 इंच लम्बा और 195 किलो तक वजनी होता है.

स्पर्म ह्वेल पृथ्वी पर सबसे बड़े और भारी मस्तिष्क वाली स्तनपायी प्राणी है. इसके मस्तिष्क का वजन 9 किलो होता है. यानी पूर्ण विकसित मानव मस्तिष्क से 6 गुणा बड़ा.

कुतरने वाले स्तनपायी प्राणियों में सबसे विशाल है दक्षिण अफ्रीका का कैपीबरा चूहा. जो भेड़ के आकार का दिखता है और 113 किलो तक वजनी होता है.

समाप्त

बिना विचारे जो करे वो पाछे पछताय

प्रसंग : कृष्णचन्द्र टवाणी

एक कुम्हार को मिट्टी खोदते समय एक हीरा मिल गया। वह उसे एक चमकीला पत्थर समझ बैठा और उसे अपने गधे के गले में बांध दिया। एक दिन एक बनिये की नजर गधे के गले में बंधे उस हीरे पर पड़ गई। उसने कुम्हार से उसका मूल्य पूछा। कुम्हार ने कहा– ''सवासेर गुड़'' बनिये से उसे खरीद लिया। बनिये ने भी उस हीरे को एक चमकीला पत्थर समझा और उसने उसे अपनी तराजू की शोभा बढ़ाने के लिए उसकी डंडी से बांध दिया।

एक दिन एक जौहरी की दृष्टि उस हीरे पर पड़ गई। उसने बनिये से उसका मोल पूछा। बनिये ने कहा पाँच रूपये। जौहरी कंजूस एवं लालची स्वभाव का था। हीरे का मूल्य केवल पाँच सुनकर वह जान गया कि बनिया इसे एक पत्थर ही समझ रहा है। अतः उसने बनिये को उसके चार रूपये देने चाहे परन्तु बनिया ने मना कर दिया। जौहरी ने विचार किया कि इतनी क्या जल्दी है?कल जाऊँगा यदि नहीं मानेगा तो पांच रूपये ही दे दूंगा। यह सोचकर वह चला गया। संयोग से कुछ ही समय पश्चात एक दूसरा जौहरी बनिये की दुकान पर आया तथा उसने वह हीरा पाँच रूपये में खरीद लिया और चला गया। दूसरे दिन वह जौहरी पुनः बनिये की दुकान पर गया तथा उससे वहा हीरा माँगा। बनिया बोला भैया! वो पत्थर तो कल ही मैंने दूसरे व्यक्ति को पाँच रूपये में बेच दिया है। यह सुनकर जौहरी को हीरा हाथ से निकल जाने का बहुत दुःख हुआ। बनिया से बोला– ''अरे मूर्ख! वह तो सवा लाख रुपये का हीरा था मात्र उसे पाँच रुपये में ही बेच दिया।'' जब कुम्हार को इस बात का पता चला तो वो सिर धुन कर पछताने लगा। बिना सोचे विचारे जल्दबाजी में निर्णय लेने से पश्चाताप के अलावा कुछ हाथ नहीं लगता। यही सिद्धांत हमारे जीवन के प्रति भी लागू होता है। हमें अपने जीवन का विकास सोच समझकर करना चाहिए।

–किशनगढ़ (राज.)

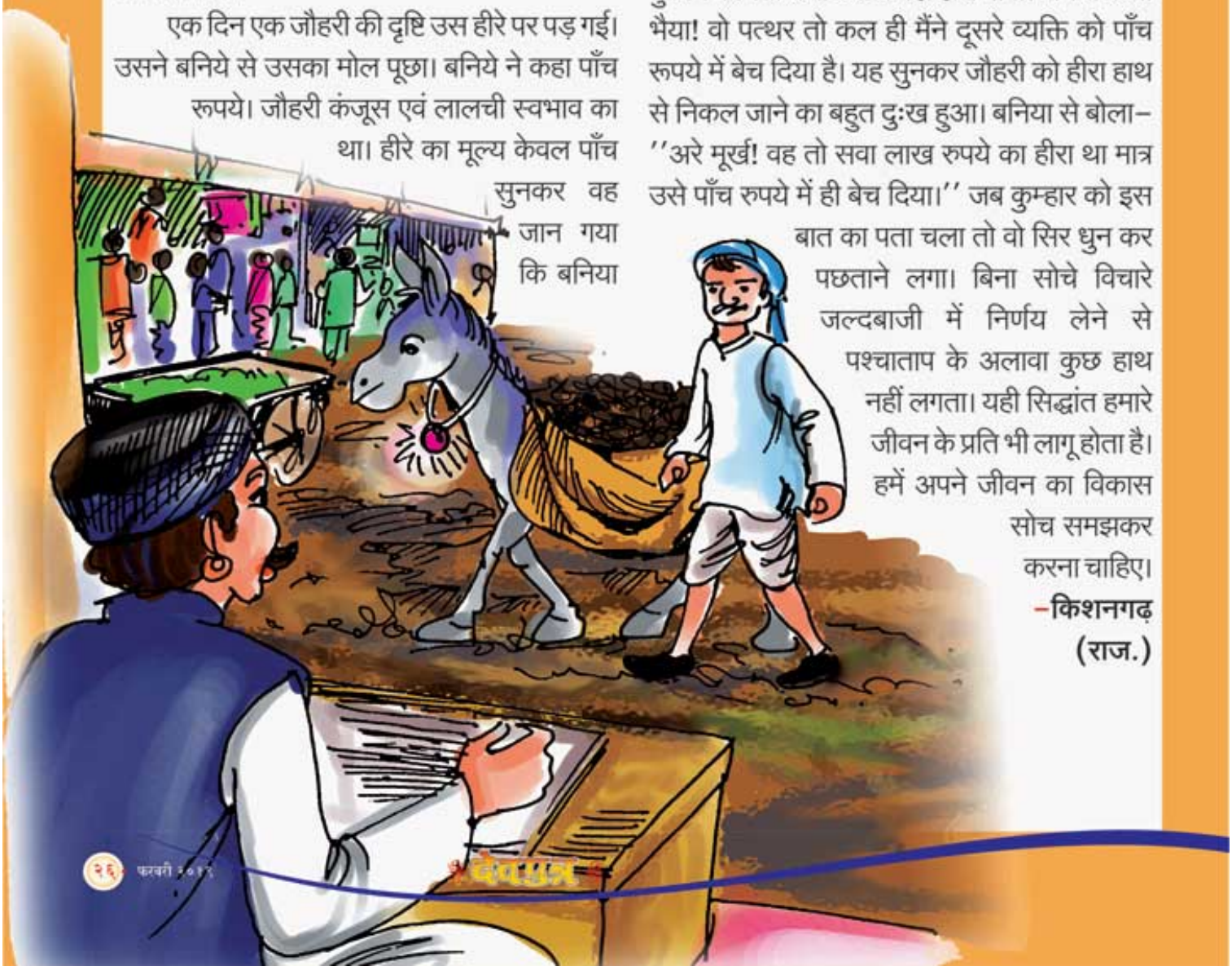

|| हमारे राज्य वृक्ष ||

गँभार

मेघालय का राज्यवृक्ष

डॉ. परशुराम शुक्ल

भारत का उपयोगी पौधा,
सभी जगह मिल जाता।
वियतनाम अमरीका तक से,
इसका गहरा नाता।
छायादार वृक्ष अति सुन्दर,
बाग बगीचों वाला।
बाइस मीटर तक जा सकता,
इसका रूप निराला।
आते ही मौसम बसन्त का,
फूलों से भर जाता।
मन भावन पीले फूलों से,
मानव शहर बनाता।
इसकी लकड़ी में गुण ऐसे,
अभिनव पाये जाये।
फर्नीचर से प्लाईवुड तक,
इससे लोग बनाते।
छाल, जड़ें, फल, बीज आदि भी,
औषधि खूब बनाते।
पेट दर्द से कुष्ट रोग तक,
पल में मार भगाते।

• भोपाल (म.प्र.)

संस्कृति प्रश्नमाला

सही उत्तर

श्रीराम को १४ वर्ष का वनवास, माद्री, ईरान, बारह, बौद्ध, चोल राजवंश, वैशेषिक दर्शन, सेठ रामजीदास गुड़वाला, महाराणा राजसिंह, नाम्बी नारायणन

परी ने कहा है

कहानी: डॉ. घमण्डीलाल अग्रवाल

रोज की भांति आज भी सारांश शाम को खेलने के उपरांत घर लौटा। कुछ देर विश्राम करके वह माँ से बोला 'मेरी प्यारी माँ, आपने खाने में क्या-क्या बनाया है?' माँ खुशी-खुशी सारांश के पास आई। उसके सिर पर हाथ फेरते हुए जवाब दिया- 'पौष्टिक दाल, चावल, सब्जी, रोटियाँ तथा साथ में सलाद भी। और हाँ, खीर भी तो रहेगी। सब्जी तो लौकी की है।'

'आप भी क्या दाल-चावल बना देती हैं, मुझे पसंद नहीं है।' सारांश ने मुँह बनाकर कहा।

'क्यों? क्यों नहीं पसंद है दाल तुम्हें? इसमें तो प्रोटीन की भरपूर मात्रा मिलती है जो शरीर के लिए अत्यंत लाभप्रद है।'

'फिर क्या खाओगे तुम? माँ ने सवाल किया।

'मुझे तो रोटी, अचार और चटनी के साथ

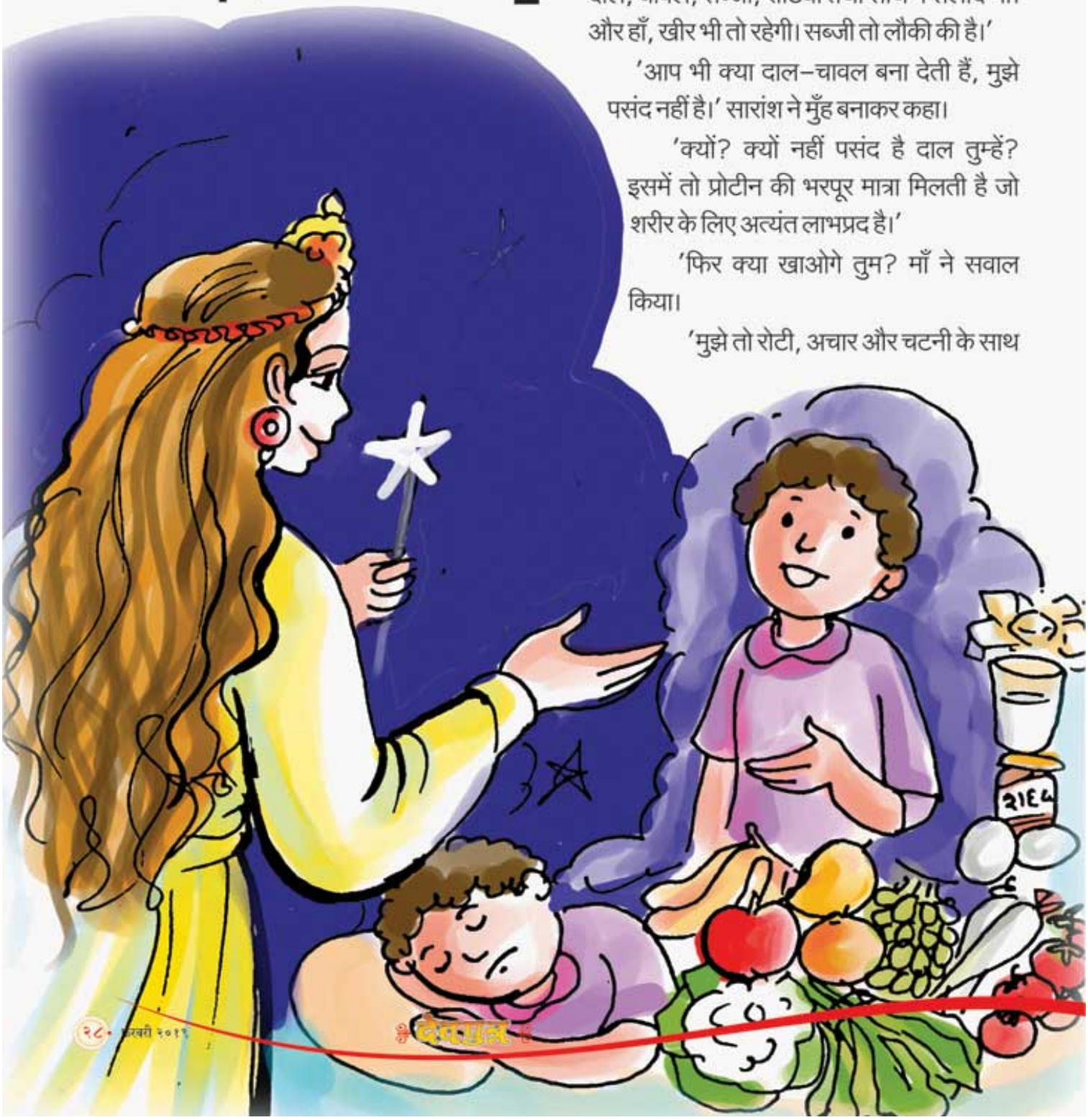

एक चाय का कप चाहिए बस।'

'जैसी तुम्हारी मर्जी।' माँ मायूस होकर बोली।

और सारांश अपनी मनचाही चीजें खाकर सो गया। उसे गहरी नींद आ चुकी थी। उसे सपना आया जिसमें उसके सम्मुख एक परी खड़ी थी। परी ने सारांश से पूछा–'क्या तुमने रात्रि का भोजन ठीक ढंग से किया?'

'हाँ! मैंने अचार व चटनी के साथ दो रोटियाँ खाई हैं।'

'यह तो संतुलित आहार नहीं है?, परी बोली।

'संतुलित आहार? मैं समझा नहीं। सारांश ने कहा।

परी बोली– 'जिस भोजन में सभी पोषक तत्व उचित मात्रा में हों, उसे 'संतुलित आहार' कहा जाता है। समझे?'

'हाँ। पर ये पोषक तत्व हैं कौन–कौन से? सारांश ने प्रश्न उछाला।

परी सारांश के प्रश्न का समाधान करने की गरज से बोली– 'कार्बोहाइड्रेट, वसा, प्रोटीन, खनिज, विटामिन, जल व रुक्षांश हैं इनके नाम।'

सारांश की जिज्ञासा बढ़ चुकी थी। उसने परी से इन पोषक तत्वों की उपयोगिता के बारे में जानने की तीव्र इच्छा व्यक्त की। वह परी से बोल पड़ा। 'परी रानी, इन पोषक तत्वों के बारे में विस्तार से मुझे समझाओ?' परी ने बात आगे बढ़ाई– 'भोजन का एक जरूरी भाग होता है। 'कार्बोहाइड्रेट' जो शरीर को ऊर्जा प्रदान करता है। यह गेहूँ, जौ, चना व बाजरा जैसे अनाजों के अतिरिक्त आलू, शरककंदी, सिंघाडा, गन्ना के साथ–साथ आम, संतरा, सेब, अंगूर आदि फलों में बहुतायत से पाया जाता है। हाँ, इन फलो के अलावा खांड, गुड, शक्कर और शहद में भी कार्बोहाइड्रेट की भरपूर मात्रा मिलती है।'

सारांश बोल पड़ा– 'अरे, वाह फिर तो हमें कार्बोहाइड्रेट की समुचित मात्रा लेनी चाहिए।'

'जरूर।' परी ने संक्षिप्त सा जवाब दिया। परी ने आगे कहा– 'अब तुम्हें 'वसा' के बारे में बताती हूँ। वसा हमारे शरीर में गरमी व ताकत लाती है जो कि दूध, घी, मक्खन और वनस्पति तेलों में पायी जाती हैं।' 'अच्छा। सारांश सोच में पड़ गया और दूसरे पोषक तत्वों के बारे में जानने की जिद करने लगा।

परी– 'तीसरा पोषक तत्व है– 'प्रोटीन', एक अत्यंत महत्वपूर्ण तत्व! इसी से हमारे शरीर की मांसपेशियाँ व हड्डियाँ मजबूत बनती है। यह अंडा, मांस, मछली, दूध, दही और घी के साथ–साथ दाल, मटर, लोबिया, अनाज एवं हरी सब्जियों में मौजूद रहता है। जो इसका सेवन नहीं करते, उनका शारीरिक विकास रुक जाता है।'

'तभी तो आज माँ ने मेरे लिए दाल व हरी सब्जियाँ बनाई थीं किन्तु मैंने वे खाई नहीं।' सारांश ने सफाई दी।

फिर परी बोली– 'खनिज भी एक आवश्यक पोषक तत्व है जो लोहा, कैल्शियम, सोडियम, फास्फोरस तथा आयोडिन इन पाँच रूपों में रहता है। लोहा हमारे रक्त में हीमोग्लोबिन बनाता है, कैल्शियम दाँतों के लिए जरूरी है, सोडियम शरीर की कोशिकाओं तथा उत्तकों की मरम्मत करता है, फास्फोरस हड्डियों की मजबूती के लिए आवश्यक है तो आयोडीन थॉयराइड हारमोन बनाने में सहायक है। यह सेब, बाजरा, अंडे, मूँगफली, पालक, साग, हरी सब्जियों सहित दूध, पनीर, केला, मांस व मछली में उपस्थित है। आयोडीन की कमी से तो घेंघा नामक रोग भी हो जाता है।'

सारांश की उत्सुकता और बढ़ चुकी थी। उसने परी से शेष बचे पोषक तत्वों के बारे में भी जल्दी–जल्दी बताने की बात कही।

परी बोली– 'अब, मैं तुम्हें 'विटामिन' की जानकारी देती हूँ। विटामिन के रूप हैं– ए.बी.सी.डी.ई. और के.। विटामिन 'ए' शरीर का विकास करता है और आँखों की रोशनी बढ़ाता है। दूध, मक्खन, पनीर, हरी सब्जियाँ, गोभी, टमाटर, गाजर, मूली, सेब, नारंगी, अंडे आदि विटामिन 'ए' के स्रोत हैं। विटामिन 'बी' हृदय, जिगर, दिमाग, आमाशय और गुर्दों को ठीक रखने में हमारा मददगार है जो दूध, हरी सब्जियों, मांस, मछली, अंडों सोयाबीन, अंकुरित आहार में मिलता है। यह चार प्रकार का होता है। बी१, बी२, बी३ तथा बी१२। विटामिन सी दाँतों तथा हड्डियों को मजबूत बनाता है और खट्टे रसदार फलों जैसे संतरा, नींबु, टमाटर, आँवला, मौसमी आदि में पाया जाता हैं विटामिन 'डी' त्वचा के रोगों को दूर रखता है और सूरज की किरणों के साथ–साथ दूध, मक्खन, अंडे, मछली के तेल आदि में बहुतायत से मिला करता है।

'तभी तो, माँ मुझे कहा करती है कि सुबह स्नान करके थोड़ी देर धूप में बैठा करो।' सारांश बोला।

'बिलकुल ठीक। ऐसे ही विटामिन 'ई' शरीर के रक्त को गाढ़ा करता है। यह पालक, गोभी, गेहूँ, जई, सोयाबीन के तेल, दूध, अंडे आदि में खूब रहता है और विटामिन 'के' का निर्माण तो तुम्हारे शरीर में स्वयं होता रहता है।'

अब सारांश उठ कर बैठ गया और परी की अर्थपूर्ण जानकारियों को बड़े ही ध्यान से सुनने लगा। परी आगे बोली– 'जल' अर्थात् पानी की उपयोगिता तो सर्वविदित है। यह कब्ज को हटाकर बीमारियाँ भगाता है। शरीर की सभी क्रियाओं में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। सभी पेय पदार्थों में जल की मात्रा रहती है। जानते हो, दिनभर में तीन लीटर पानी पीना सेहत के लिए अच्छा कहा गया है। 'रुक्षांश' पाचन के लिए उत्तम है जो पानी को सोखकर भोजन के परिणाम को बढाता है। सलाद, सब्जियों तथा छिलकों व रेशे वाले फलों में यह पाया जाता है। अब अंत में मैं तुम्हें दूध के बारे में बताऊँगी। दूध एक संपूर्ण भोजन है। जिसमें सारे पोषक तत्व रहते हैं। 'छाछ' में भी चर्बी को छोड़कर बाकी के पोषक तत्व होते हैं।

'एक बात और?' सारांश बोला।

'कौन–सी बात?' परी ने पूछा।

सारांश बोला– 'हमें भोजन कितनी बार और कब–कब करना चाहिए दिन में?

परी बोली– 'पहली बात तो यह कि भोजन का जो समय निश्चिय किया जाए, उसी समय प्रतिदिन भोजन करना चाहिए। दूसरी बात यह कि दो भोजन के मध्य छह घंटों का अंतर रहे। बच्चे दिन में तीन–चार बार भोजन करे। भोजन करते समय बोलना अथवा पढना भी नहीं चाहिए।

इतना कहकर परी ओझल हो गई। कुछ ही देर में दिन भी निकल आया था। सारांश मुस्कराता हुआ उठा और माँ को आवाज लगाई– 'माँ, जरा मेरे पास तो आना?'

फिर सारांश ने माँ को वे सारी बातें बताई जो परी ने उसे कहीं थी। माँ अत्यंत प्रसन्न हुई। वह मन ही मन बोली– 'जो बातें मैं आज तक नहीं समझा सकी सारांश को, एक ही रात में परी समझा गयी। चलो देर आए, दुरूस्त आए।'

सारांश ने माँ के साथ मिलकर मजे से पौष्टिक नाश्ता किया।

– गुरुग्राम (हरियाणा)

छोटा बड़ा

बच्चों! वीर तिलका माँझी के साथ अंग्रेजों से लोहा लेने जुटे अनेक वनवासी वीर उनके इस जत्थे के वनवासियों को छोटे से बड़े के क्रम में जमाइए।

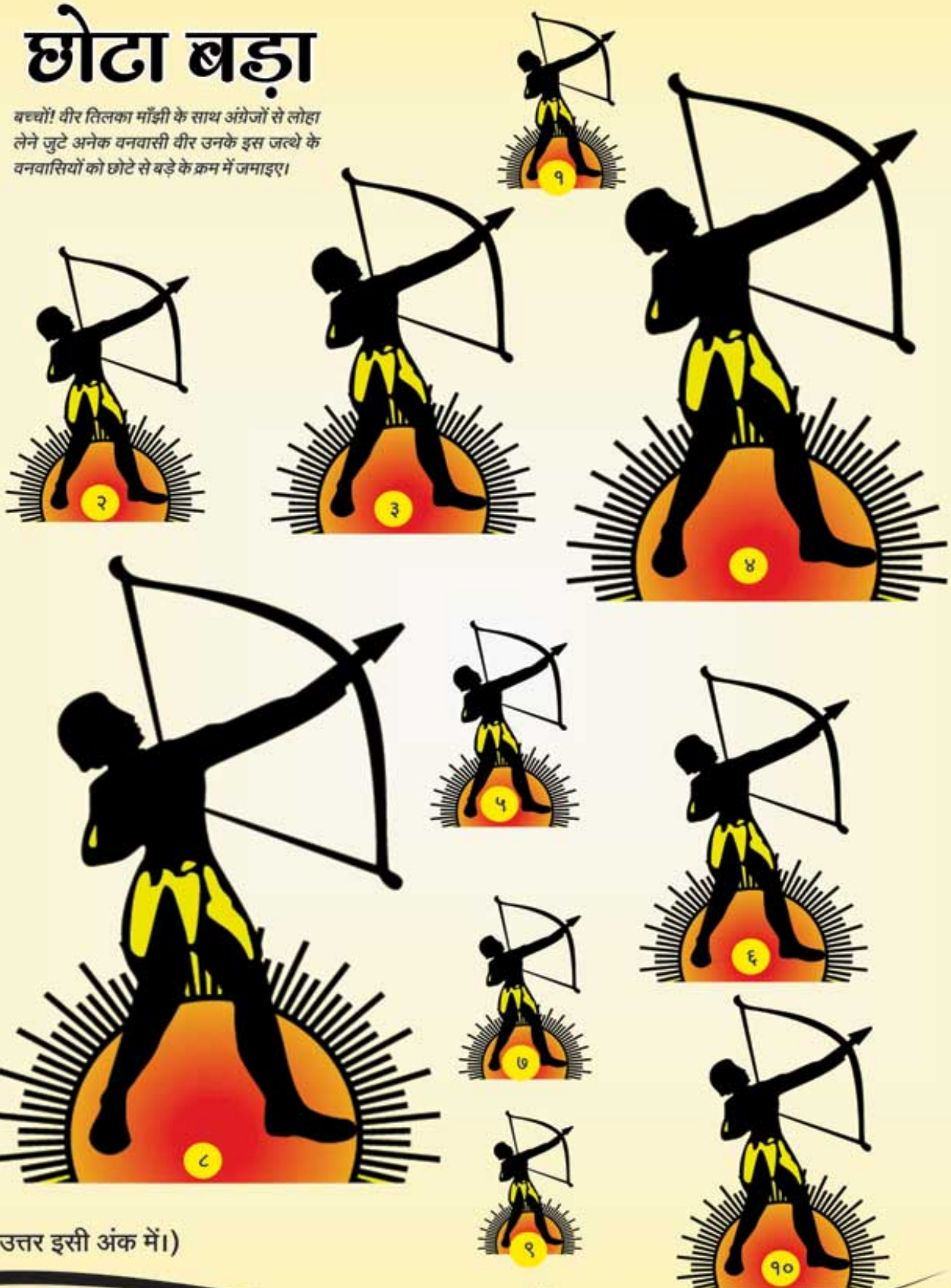

(उत्तर इसी अंक में।)

(गतांक के आगे)

कामरूप के संत साहित्यकार (१९)

कथासत्र–१८

(समापन किश्त)

श्री वैकुण्ठनाथ भागवत भट्टाचार्य या भट्टदेव
(आविर्भाव १५५८ ई. तिरोभाव १६३८ ई.)

संवाद : डॉ. देवेनचन्द्र दास 'सुदामा'

अगले रविवार को फिर कथा सत्र का आरंभ हुआ। माधव ने नानाजी से पूछा नानाजी! आपने कहा था कि सतगुरु दामोदर के कई विद्वान शिष्य थे और साहित्यकार भी थे, उनमें सबसे प्रमुख कौन थे?

दादाजी – हाँ बताता हूँ। गुरु दामोदर के शिष्यों में से श्री वैकुण्ठनाथ भागवत भट्टाचार्य याने भट्टदेव प्रमुख थे। यह बताओ श्रीमंत शंकरदेव के शिष्यों में से सबसे प्रमुख कौन थे?

मनोरमा – माधव देव थे दादाजी!

दादाजी – हाँ, तुमने ठीक कहा बेटा। ठीक उसी प्रकार भट्टदेव भी थे। भट्टदेव भी ब्राह्मणवंश के थे। ऊपरी कामरूप में पिंगला नामक एक गांव था। उस गाँव में **बरओजा** नामक पराशर गोत्र के एक बहुत बड़े विद्वान ब्राह्मण थे। अपने विद्वता के कारण आपको लोग **बरओजा** कहते थे। उनका सही नाम था प्रियोत्तम और उनके गुरुकुल में दूर–दूर से विद्यार्थी आकर पढ़ते थे। उनका और एक नाम था श्रीचन्द्रभारती। उनकी पत्नी का नात तारादेवी। हरिदेव, शंकरदेव, दामोदरदेव और माधवदेव की तरह श्रीचन्द्रभारती भी ऊपरी कामरूप छोड़कर निचले कामरूप के भेराग्राम आए और वहाँ रहने लगे। बहुत दिन उनकी कोई संतान नहीं हुई। एक संन्यासी के आशीर्वाद से दो पुत्रों का जन्म हुआ। प्रथम पुत्र का नाम रखा रमाकांत और दूसरे का नाम रखा वैकुण्ठनाथ। श्री चंद्रभारती ने दोनों को उचित शिक्षा प्रदान कर संस्कृत में विद्वान बनाया। दूसरा पुत्र वैकुण्ठनाथ ही बाद में भट्टदेव नाम से प्रख्यात हुआ और कामरूपी (असमीया) साहित्य के इतिहास में मील का पत्थर बना। भट्टदेव का जन्म सन् १५५८ ई. में हुआ था। आप गोपालदेव नामक एक बड़े संस्कृत विद्वान के गुरुकुल में पढ़कर विद्वान बने थे और समाज में भागवत का प्रवचन करने लगे। आप की विद्वता और वाग्मिता से प्रभावित होकर ब्राह्मण समाज ने भागवत भट्टाचार्य की उपाधि प्रदान की। उस समय से आपका नाम भट्टदेव से प्रख्यात हुआ। भारतीय परम्परा में शिक्षा ज्ञान जितना ही प्राप्त कर न लें, किन्तु गुरु से शरण दीक्षा के बिना ज्ञान परिपक्व नहीं होता है। भागवत वक्ता शुकदेव का भी ऐसा ही हुआ था। आखिर पिता व्यास जी के आदेश पर आपने राजर्षि जनक के पास जाकर दीक्षा ली थी। भट्टदेव भी बड़े–बड़े समाज में भागवत व्याख्या कर जनता जनार्दनों को मंत्र मुग्ध करने तो लगे, किन्तु उनके विद्वान पिता की दृष्टि में यह अधूरा लगा था। एक दिन पुत्र को पास बुलाकर कहा– ''पुत्र! तुम्हारी विद्वता की प्रशंसा समाज में मुखर तो हो गयी है, परंतु तुम अभी भी अधूरे हो?'' भट्टदेव पिता की तरफ देखने लगा। पिता ने कहा– ''बेटे ! सतगुरु के चरणों में अपने को समर्पित जब तक नहीं किया जा सकता तब तक ज्ञान की परिपूर्णता नहीं हो सकती है। इसलिए कोई वैष्णव सतगुरु के पास जाकर शरण ग्रहण कर लो।''

भट्टदेव ने पिता से कहा– ''सन्त गुरु कौन हैं, आप ही बताइए।''

तब पिता ने गुरु **दामोदरदेव** के पास जाने की सलाह दी।

पिता के आदेशानुसार भट्टदेव पाटबाउसी में दामोदर देव के सत्र में उपस्थित हुए। उस समय गुरुदेव कई शिष्यों के साथ भागवत की चर्चा कर रहे थे। भट्टदेव ने दूर से गुरु के तेजस्वी स्वरूप दर्शन कर रोमांचित हो गए। आप तुरंत जाकर गुरुदेव के चरणों में दण्डवत प्रणाम कर शरण देने के

लिए प्रार्थना की। गुरु ने तत्काल उनका अनुरोध स्वीकार नहीं किया। **परीक्षा के बिना सद्गुरु किसी को शिष्य नहीं बनाते हैं।** शाम को गुरु ने भट्टदेव को भागवत पाठ करने का आदेश दिया। उनसे भागवत पाठ और व्याख्या सुनकर गुरुदेव सहित सभी भक्त भावविभोर हो गए। गुरु ने भट्टदेव को शुभदिन देकर शरण प्रदान किया। गुरु के पास रहकर भट्टदेव अनेक तत्वज्ञान प्राप्त करने लगे। उसके पश्चात गुरु ने उनको समाज में भागवत चर्चा करने हेतु आदेश दिया। कुछ दिन इस प्रकार भागवत के भक्ति ज्ञान प्रचार कर आप पुनः गुरु के पास आए और पाटबाउसी सत्र में रहने लगे। दामोदर गुरु के धर्ममत के बारे में पहले ही उल्लेख किया गया था। तुम्हें स्मरण है क्या?

मनोरमा – जी हाँ दादाजी! गुरुदेव ने एक कृष्ण भक्ति धर्म का प्रचार किया था ओर किसी अन्य देवी–देवता की उपासना को नकार दिया था। जिसके कारण उनको राजा ने राजधानी में ले जाने के लिए दूत भेज दिया था।

दादाजी– तुम ठीक कह रही हो। गुरुदेव राजा के पास जाते समय सत्र संभालने का दायित्व भट्टदेव को दे गये थे। और श्रीमद्भागवत को कामरूपी गद्य में अनुवाद करने का आदेश देकर गए थे। मैंने पहले ही उल्लेख किया था कि गुरु दामोदरदेव साहित्यकार कम थे पर साहित्यकारों का सृजन करने वाले अधिक थे। उन्होंने अपने विद्वान शिष्य को कामरूपी भाषा में भागवत अनुवाद करने के लिए इस प्रकार कहा था–

आरु एक जगत ईश्वर आज्ञा धरा।
कथा बँधे एक खण्ड भागवत करा।।

अर्थात् ईश्वर का आदेश मानकर गद्य में भागवत लिखो। गुरु का आदेश शिरोधार्य कर लिखने का काम प्रारंभ किया। इस बीच आपने विवाह कर संसार धर्म का भी पालन किया। एक पुत्र का भी जन्म हुआ। शिक्षा दीक्षा देकर उसका विवाह भी करवा दिया। सभी महान पुरुषों का जीवन कठोर परीक्षामूलक होता है। भट्टदेव का भी हुआ। पुत्र अकाल में ही कालकवलित हो गया। बहु सती हो गई। भट्टदेव ने सबकुछ प्रभु का आशीर्वाद मानकर गुरु को स्मरण कर सत्र का संचालन और साहित्य सृजन में तल्लीन हो गए।

माधव – नानाजी! भट्टदेव ने कितने ग्रंथों की रचना की थी?

दादाजी– हाँ, बताता हूँ। भट्टदेव ने गुरु दामोदर से शरण ग्रहण करने के पश्चात ही भक्तिसार नामक एक पुस्तक लिखी थी। उसके बाद कथा भागवत लिखा। श्रीमद्भागवत एक बहुत बड़ा ग्रंथ है।

शंकर – दादाजी! गत वर्ष हमारे इस नगर में सात दिन भागवत प्रवचन हुआ था न?

दादाजी – हॉ, तुमने ठीक ही कहा। भागवत गद्य में लिखने में उनको बहुत दिन लगे। इस ग्रंथ के बारे में फिर चर्चा करेंगे। उसके पश्चात् संस्कृत भाषा के सबसे चर्चित श्रीमद्भगवतद्गीता को भी कामरूपी गद्य में अनुवाद किया। मैंने पहले ही कहा था कि भट्टदेव संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान थे। आपने कामरूपी समाज में प्रमाणिक रूप में एकेश्वरवाद की प्रतिष्ठा के लिए संस्कृत भाषा के करीब पचपन (५५) ग्रंथों का सार संगृहित कर संस्कृत भाषा में भक्तिविवेक नामक ग्रंथ की रचना की थी, जिसका कामरूपी अनुवाद उनके शिष्य गोविन्द मिश्र ने किया था।

मनोरमा – दादाजी! श्रीमंत शंकरदेव ने भी इस प्रकार का एक ग्रंथ संस्कृत भाषा में लिखा था न?

दादाजी – हाँ, उस ग्रंथ का नाम था **भक्तिरत्नाकर**। उसके बाद भट्टदेव ने **भक्तिरत्नावली** नामक ग्रंथ का भी

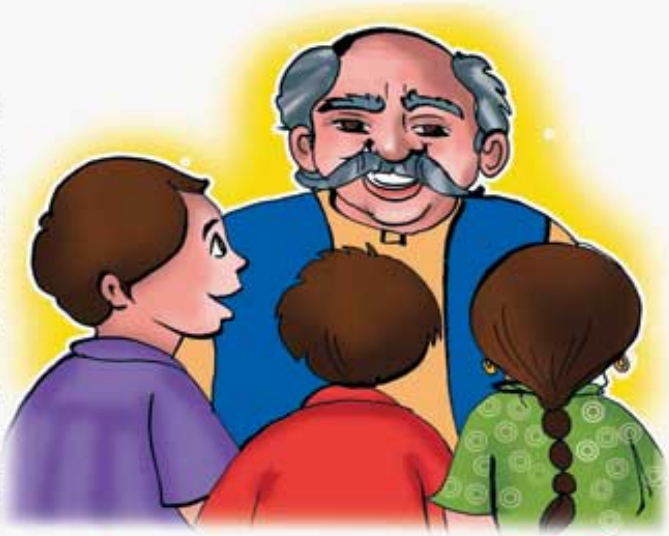

कामरूपी गद्य में अनुवाद किया था।

केवल इतना ही नहीं आपने शरण संग्रह अनेक भक्ति गीत भी लिखे थे। उस समय भट्टदेव ने दामोदरी वैष्णव धर्म को शिखर तक ले गए थे। इस प्रकार भाषा साहित्य और समाज के लिए अपना जीवन समर्पित कर सन १६३८ ई. में वैकुण्ठनाथ भागवत भट्टाचार्य याने भट्टदेव वैकुण्ठवासी हो गए।

माधव – नानाजी! भट्टदेव का जीवन और कर्म सचमुच आकर्षणीय और प्रेरक है। आज हम गद्य में ही अधिक पढ़ते हैं, उस समय गद्य में साहित्य नहीं थे क्या?

दादाजी– तुमने ठीक ही कहा। उस समय सभी साहित्य कविता या पद्य में लिखा जाता था। भट्टदेव सोलहवीं सदी में कामरूपी गद्य भाषा में ग्रंथ लिखकर कीर्तिमान बने थे। जिसके कारण भट्टदेव को भारतीय गद्य साहित्य का जनक माना जाता है।

केवल कामरूपी या असमीया भाषा के साहित्यकार–विद्वानों ने ही नहीं, अपितु बंगाल के आचार्य प्रफुल्लचंद्र राय और कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने भी दिल खोलकर उनके गद्य साहित्य की सराहना की थी। आचार्य प्रफुल्लचंद्र राय ने इस प्रकार लिखा था– ''.....indeed the prose Gita of Bhattadeva composed in the sixteenth century is unique of its kind...It is a priceless treasire Assamese prose Literature developed to a stage in the for distent sixteenth century which no other literature of the world reached except the writing of hooker and latimer in England.

रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने भट्टदेव की कथा गीता के बारे में इस प्रकार लिखा था।

...the author of the book who could handle prose in such remarkable lucid style more a century before we had any prose in Bengali

मनोरमा– दादाजी! आपने जो पाँच महान संत साहित्यकारों के बारे में कहा ये सब एक से बढ़कर एक महान थे।

दादाजी– कामरूपी, वर्तमान असमीया साहित्य के मध्ययुग को स्वर्णयुग कहा जाता है। आगे तुम्हारी परीक्षा है इसलिए कुछ दिन कथा सत्र बंद रहेगा। आज बहुत देर हो गई। राम...राम...

तीनो – राम...राम....

।। समाप्त ।।

सुन्दर रंग भरो

● चाँद मो. घोसी

॥ बाल प्रस्तुति ॥

अगर मैं वृक्ष बनता

कविता : वैदिका सक्सेना 'अर्शी'

अगर मैं वृक्ष बनता,
तो कितना अच्छा होता।
खड़ा खड़ा लहराता,
खूब हवा मैं देता।
मेरी हरियाली देखकर,
सब मेरे पास आते।
मेरे सुन्दर फूल महकते,
स्वादिष्ट फल सब खाते।
मैं लोगों को छाया देता,
राहगीर राहत पाते।
एक तो मैं तुम्हें आक्सीजन देता,
और तुम मुझे ही काट डालते।

- अहमदाबाद (गुजरात)

॥ बाल प्रस्तुति ॥

हाथी आया

कविता : जय कुर्मी

ऊँचा, मोटा हाथी आया,
पापा ने उसको बुलवाया।
पंखे जैसे कान हिलाता,
रह-रह अपनी सूँड़ उठाता।
आगे पीछे खूब मटकता,
खंभे जैसे पैर पटकता
पूँछ हिलाकर आता जाता,
लंबे दाँतों को चमकाता।
जब कहती है गुड़िया रानी,
सूँड़ उठाकर देता सलामी
हौदे में वह हमें बिठाता,
हम सबको वह रोज घुमाता
खूब मजे की सैर कराता।

- गौरझामर (म.प्र.)

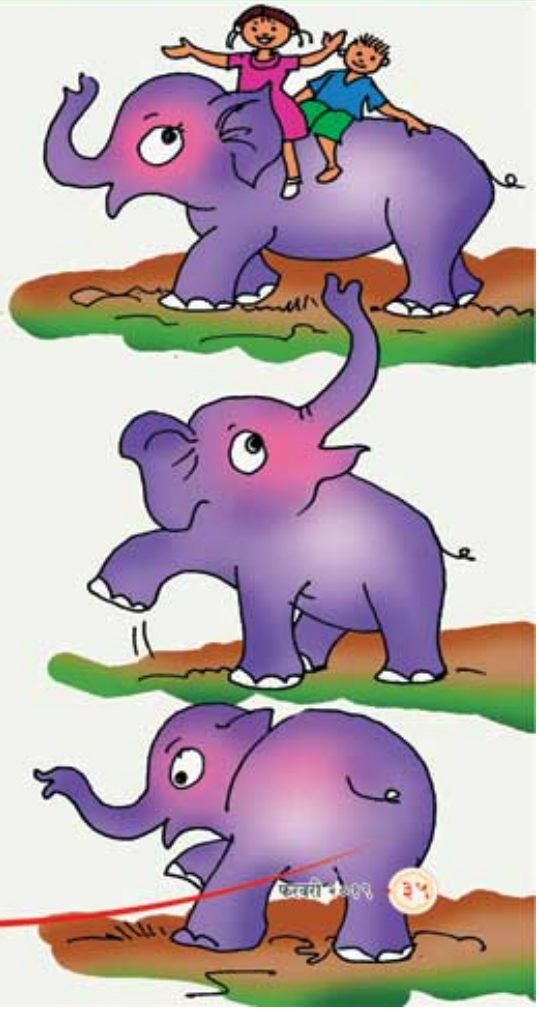

जिज्ञासा

कहानी: तारादत्त जोशी

जिज्ञासा बहुत खुश थी। आज वह पहली बार रेल में बैठकर अपने दादाजी के साथ हरिद्वार घूमने जा रही थी। हर बात पर प्रश्न करना उसका स्वभाव था। रेलवे स्टेशन पहुँचते ही उसने दादाजी से एक साथ कई प्रश्न पूछ लिए। ''दादा जी! रेल इतनी बड़ी क्यों होती है? यह लोहे की पटरियों पर क्यों चलती है? रेल पहाड़ पर क्यों नहीं चल सकती है?'' सीट पर बैठते ही उसकी नजरें डिब्बे का निरक्षण करने लगी। रेल के चलते ही वह खिड़की से बाहर को देखने लगी। रास्ते में पड़ने वाले फसलों के लहलहाते मैदान, बड़े–बड़े पुल, स्टेशनों पर आती जाती गाड़ियां, गाड़ियों में चढ़ते उतरते लोगों की भीड़ हर चीज उसके लिए एक कौतूहल का विषय था।

रामनगर से काशीपुर, मुरादाबाद, नजीमाबाद, लक्सर होते हुए रेल ठीक तीन बजे हरिद्वार जंक्शन पर पहुँची। जंक्शन से दादाजी ने रिक्शा लिया और दोनों श्यामलोक कालोनी पहुँचे। यहां जिज्ञासा की बुआ रहती हैं। बुआ जी ने नाश्ता तैयार किया। दादा जी ने कहा– ''बेटा हाथ मुँह धोकर नाशता कर लो और फिर आराम करो। कल हम हरि की पौड़ी घूमने जायेंगे और वहीं स्नान करेंगे।''

दूसरे दिन जिज्ञासा दादा जी के साथ हरि की पौड़ी में गयी और गंगा जी के शीतल जल में स्नान किया। दादा जी ने स्नान के बाद सूर्य को अर्घ्य दिया और फिर दोनों ने गंगा पूजा की। पूजा अर्चना के बाद गंगा के किनारे बैठकर दादा जी जिज्ञासा को बताने लगे कि किस प्रकार कठोर तपस्या करके राजा भगीरथ गंगा जी को पृथ्वी पर लाए और कपिल मुनि के श्राप से भस्म हुए अपने पुरखों का उद्धार किया।

जिज्ञासा दादा जी की बातें सुनते हुए गंगा जल अपनी अंजलि में भर कर छोड़ रही थी। उसे देखकर ऐसा लग रहा था जैसे वह गंगा जी के प्रवाह में कुछ खोज रही हो। तभी दादाजी बोले, ''बेटा क्या खोज रही हो?''

दादाजी, ''इतनी बड़ी नदी में एक भी मछली नहीं दिखाई दे रही है। क्या गंगा नदी में मछलियां नहीं होती हैं?''

बेटा ''गंगा नदी में डाल्फिन नाम की मछली पायी जाती है। यह मछली हमारे देश की राष्ट्रीय जलीय जीव है। किन्तु गंगा नदी में बढते हुए प्रदूषण के कारण इस मछली का जीवन संकट में हैं।''

''जीवन संकट में और प्रदूषण? जिज्ञासा बुदबुदायी। हाँ बेटा, ''मानवजनित और औद्यौगिक कचरे से गंगा नदी का जल बहुत अधिक प्रदूषित हो गया है। जो डाल्फिन के जीवन पर प्रतिकुल प्रभाव डाल रहा है। इसी कारण इस मछली का जीवन संकट में है।''

''चलो, कहीं पर बैठ कर नाश्ता करते हैं। फिर मनसा देवी मंदिर जायेंगे।''

दोनों बातें करते हुए एक होटल में आये और नाश्ता किया। दादाजी ने दो बड़े दोनों में चने और पूरिया खरीदी और कुछ खाली दोने लेकर होटल के बाहर आ गए।

जिज्ञासा और दादा जी कुशाव्रत घाट की ओर बढ़ने लगे। आगे मांगने वालों की कतार लगी थी। दादा जी थैले में चने और पूरियां खाली दोनों में डालकर जिज्ञासा को देते हुए बोले, ''लो बेटा एक–एक दोना सबको बांट दो।'' जिज्ञासा एक–एक कर सबको दोने देने लगी। बाँटते–बाँटते उसकी नजर कतार के अंत में बैठे एक ऐसे व्यक्ति पर पड़ी जिसके पैर हाथी के पैर की तरह मोटे थे। जिज्ञासा उस व्यक्ति को देखकर ठिठक गयी और दादा जी से सटकर धीरे से बोली, ''दादाजी !'' वह देखो.. उस आदमी के पैर...।''

''उस आदमी के पैर इतने मोटे क्यों है?'' ''वह कैसे चलता होगा... दादाजी ?''

बेटा, ''उस आदमी को 'फाइलेरिया' नाम की

बीमारी है। इसी कारण उसके पैर मोटे हैं।''

दादाजी, ''यह तो खतरनाक बीमारी है। यह बीमारी कैसे हो जाती है?''

बेटा, ''यह बीमारी 'फाइलेरिया बोनक्राफ्टी' नामक कृमि से फैलती है। क्यूलेक्स प्रजाति का मच्छर इस बीमारी को फैलाता है। इस बीमारी में रोगी के पैरों में सूजन होकर पैर हाथी के पैर की तरह मोटे हो जाते हैं। इसीलिए इस बीमारी को हाथी पांव की बीमारी भी कहते हैं।''

दादाजी, ''इतना छोटा मच्छर इतनी बड़ी बीमारी को कैसे फैला देता है? इसके लक्षण भी तो दिखाई देते होंगे?''

बेटा, 'फाइलेरिया बोनक्राफ्टी कृमि धागे की तरह होता है और यह शरीर में लासिका (लिम्फ) में रहता है। इस कृमि की प्रजनन क्षमता इतनी अधिक होती है कि एक वयस्क कृमि से लाखों कृमि पैदा हो जाते हैं। जब इन कृमियों का जीवन काल समाप्त होता है तो वे लसिका के अंदर ही मर जाते है और लसिका के मार्ग को अवरुद्ध कर देते हैं। क्यूलैक्स प्रजाति का मच्छर इस बीमारी को संक्रमित व्यक्ति से स्वस्थ व्यक्ति में पहुँचा देता है।'' प्रारम्भ में इस बीमारी का कोई लक्षण नहीं दिखाई देता है। किन्तु कुछ समय बाद संक्रमण का पता चलता है। संक्रमित व्यक्ति का पहले बुखार आने लगता है और फिर बुखार जल्दी–जल्दी आने लगता है। संक्रमण प्रभावित अंगों में दर्द होने लगता है और शरीर में लाल चकत्ते पड़ने लगते हैं और फिर धीरे–धीरे हाथ पैर और अन्य अंगों में सूजन

होने लगती है और बीमारी भयंकर रूप धारण कर लेती है।

''दादाजी! आजकल तो सारी बीमारियों का उपचार सम्भव है। क्या इस बीमारी का इलाज नहीं होता है?''

''यदि समय पर जांच हो जाय और संक्रमण का पता लग जाय तो इस बीमारी का उपचार सम्भव है। इसके लिए संक्रमित व्यक्ति के रक्त और त्वचा की जांच जरूरी है। संक्रमण पाजीटिव आने पर दवा से बीमारी ठीक हो जाती है। किन्तु बीमारी के जटिल अवस्था में पहुँचने पर फिर इलाज सम्भव नहीं है।''

हाँ बेटा... ''मच्छर देखने में छोटा जीव ज:र है, किन्तु यह कई बीमारियों को फैलाता है। मादा 'एनाफिलीज' मच्छर मलेरिया बीमारी का प्रसार करता है। 'ऐडीस' प्रजाति का मच्छर डेंगू बुखार, चिकनगुनिया और जीका वाइरस का प्रसार करता है। 'क्यूलेक्स' मच्छर के बारे में तो तुम जान ही चुकी हो कि यह फाइलेरिया बीमारी का प्रसार करता है। मच्छर से बचने का एक ही उपाय है कि हम अपने आसपास सफाई रखें ताकि मच्छर पनपने ही न पाये।''

''हाँ दादाजी! गंदगी ही सारी बीमारियाँ की जड़ है। मैं यहां से लौटने पर अपने विद्यालय में सभी साथियों को हाथी पांव और मच्छर से फैलने वाली सभी बीमारियों के बारे में बताऊंगी और सभी साथियों को प्रेरित करूंगी कि वे अपने आस–पास, घर और गाँव को स्वच्छ रखें और मच्छर को न पनपने दें। साथ ही अपने आस–पास सभी लोगों को मच्छर से फैलने वाले रोगों के बारे में बताएं। जिससे कि लोग समय पर अपनी जाँच करा सकें और रोगों से बच सकें।''

हाँ बेटा, ''जब हमारे आस–पास घर गाँव में सफाई होगी तभी स्वच्छ और स्वस्थ भारत का निर्माण हो पायेगा।

– हरिपुरा, बाजपुर (उत्तराखण्ड)

बाल साहित्य को युगानुकूल, राष्ट्रधर्म अनुकूल और युवानुकूल बनाने की आवश्यकता है। - श्री अष्ठाना

कटनी। राष्ट्रीय साहित्य पुस्तक मेला समिति कटनी द्वारा दिनांक २१ से २६ दिसम्बर २०१८ तक आयोजित कटनी साहित्य महोत्सव एवं पुस्तक मेला का आयोजन सम्पन्न हुआ। समारोह में बाल साहित्य पर भी महत्वपूर्ण विमर्श हुआ। मुख्य वक्ता के रूप में देवपुत्र के प्रधान सम्पादक श्री कृष्णकुमार अष्ठाना ने बाल साहित्य को युगानुकूल, राष्ट्रधर्म अनुकूल, युवानुकूल बनाने पर बल दिया। सत्र के मुख्य अतिथि डॉ. राघवेन्द्र शर्मा व विशिष्ट अतिथि प्रख्यात बाल साहित्यकार डॉ. नागेश पाण्डेय 'संजय' व डॉ. प्रीति प्रवीण खरे रहे। अध्यक्षता श्री दीनदयाल शर्मा ने की। अन्यान्य विभिन्न सत्रों में बाल साहित्य के अनेक विद्वानों ने अपने विचार व्यक्त किए। समारोह में बच्चों की साहित्यिक प्रतिभा के विकास एवं प्रोत्साहन के लिए अनेक कार्यक्रम आयोजित हुए। आयोजन में डॉ. सुधा गुप्ता 'अमृता' एवं डॉ. जगदीश गुप्ता का प्रभावी संयोजन सहभाग रहा।

खुश होता है मोबाइल

कविता : डॉ. राकेश चक्र

बॉल छीनकर बचपन से
खुश होता है मोबाइल
बच्चे उससे चिपक गये हैं
गलियाँ सुनी साहिल

समय बेसमय खाना रहता
माँ अक्सर चिल्लाती
दूध गिलासी लिए हाथ में
माँ है प्यार जताती
ममता के भावों से रूठी
आज घुँघरिया पायल

बड़ी खुशामद
नन्हें राजा रूठें आँख दिखायें
दाल-सब्जियाँ नहीं सुहायें
चाउमिन हँस-हँस खायें
खुशियों ने दीवारें तोड़ीं
मन माँ का अब घायल
मान-मनौव्वल
पढ़ने का अब
माँ करती है रोज
पिता रोज डाँटें-फटकारें
कड़वा लगता भोज
टीवी-कम्प्यूटर का भाई
हर कोई है कायल

– मुरादाबाद (उ.प्र.)

फूलों ने बारात सजाई

कविता : रावेन्द्र कुमार 'रवि'

रंग रँगीले उड़े हवा में,
कहो, ''कौन-सी ऋतु है आई?''
पीपल-पाकड़-आम-आँवला,
सोए हुए पेड़ सब जागे!
आने को हैं पात नए अब,
पात पुराने हैं सब भागे।
फूल खिलेंगे सुंदर महके,
यही साचे वे लें अँगड़ाई।
कई महीनों से सोए जो,
भालू लगे टहलने उठकर।
आँखों से उड़ गई नींद अब,
मेढक भी चल पड़े फुदककर।
फोटो की दराज से झाँके,
एक छिपकली कुछ अलसाई।
कैल्शियम की परत हटाकर,
योंघे कवच तोड़कर फिसले।
बिच्छू-कानखजूरे दोनों,
यूरे के नीचे से निकले।
पत्थर के नीचे से सरके,
साँपों ने भी चाल दिखाई।
पंक्ति बना चल पड़ीं चीटियाँ
ढूँढ रही हैं मस्त मिठाई।
उपवन की महकी हर क्यारी,
फूलों ने बारात सजाई।
इनका रस पीने को तितली,
प्यूपा में से बाहर आई।
रंग रँगीले उड़े हवा में,
कहो, ''कौन सी ऋतु है आई?''

– खटीमा (उत्तराखण्ड)

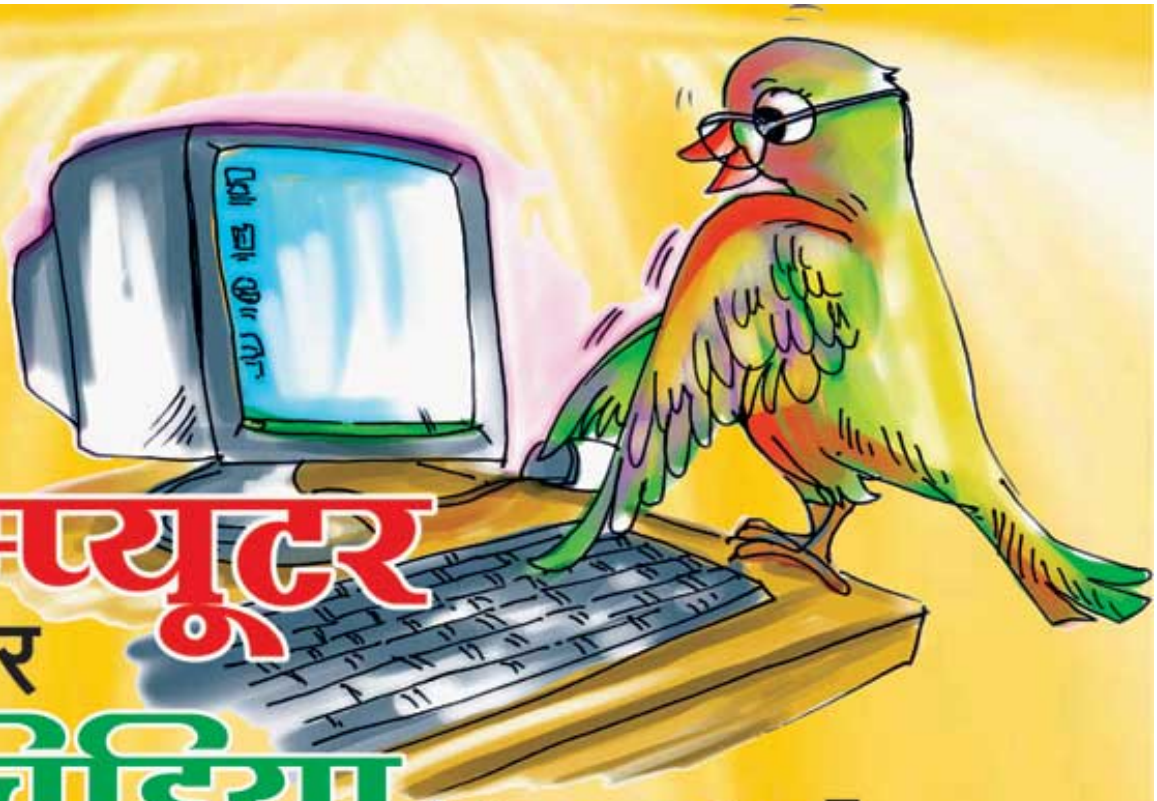

कम्प्यूटर पर चिड़िया

कविता : प्रभुदयाल श्रीवास्तव

बहुत देर से कम्प्यूटर पर, बैठी चिड़िया रानी।
बड़े मजे से टाईप कर रही, थी कोई बड़ी कहानी।।
तभी अचानक चिड़िया ने, जब गर्दन जरा घुमाई।
किंतु न जाने किस कारण, वह जोरों से चिल्लाई।।
कौआ भाई फुदक फुदक कर, शीघ्र वहां पर आये।
"तुम्हें क्या हुआ बहिन चिरैया", कौआ जी घबराये।।
चिड़िया बोली पता नहीं, हुई कैसी ये लाचारी।
हुआ दर्द गर्दन में मुझको, कौआ भाई भारी।।
तब कौवे ने गिद्ध वैद्य से, उसकी जांच कराई।
वैद्यराज ने सर्वाईकल, नामक बीमारी पाई।।
कम्प्यूटर पर बहुत देर, बैठी थी चिड़िया रानी।
जोर पड़ा गर्दन पर इससे, हुई बहुत ही हानि।।
कम्प्यूटर पर बहुत देर, मत बैठो मेरे भाई।
बहुत अधिक जो बैठा, उसको यह बीमारी आई।।

– छिंदवाड़ा (म.प्र.)

।। बाल प्रस्तुति ।।

समस्या हल करिए

● यश खसिया

आपको धातु के नौ गोले दिए गए हैं। वे दिखने में बिलकुल एक जैसे हैं। पर उनमें से एक का वजन कुछ कम है। आपको उसे छांटना है। इस काम के लिए आप के पास एक तराजू है। पर आप उसका उपयोग केवल दो बार कर सकेंगे। कैसे छाँटेंगे?

– वारासिवनी (म.प्र.)

पुस्तक परिचय

मूल्य २९५/-

मेरी ५७ बाल कविताएँ - सुप्रसिद्ध बाल साहित्यकार डॉ. प्रत्यूष गुलेरी की सुन्दर मनभावन एवं बालमन के लिए विविध कल्पनाएँ जगाती ५७ बाल कविताओं का मोहक संकलन।

प्रकाशन – बुक क्राफ्ट पब्लिशर्स, डब्ल्यू–११२, ग्रेटर कैलाश –आय, द्वितीय मंजिल, नई दिल्ली ११००४८

मूल्य २५०/-

पेड़ लगाओ - बाल साहित्य संसार के सुविख्यात लेखक समीक्षक संपादक राजकुमार जैन 'राजन' द्वारा रचित ८५ बाल कविताओं का चित्रांकित संकलन, जिसमें बाल कविताओं में कई परम्परागत विषयों के साथ आधुनिक भावबोध की अनेक कविताएं सम्मिलित हैं।

प्रकाशन – अयन प्रकाशन, १/२०, महरौली, नई दिल्ली ११००३०

मूल्य १५०/-

गज्जू की वापसी- इंजी. आशा शर्मा बाल साहित्य की जानमानी लेखिका हैं। आपकी २० रोचक बाल कहानियों का संकलन है गज्जू की वापसी। इन कहानियों में बाल मनोविज्ञान एवं मनोरंजन का समुचित संतुलन स्थापित करते हुए मनभावन प्रस्तुति दी गई है।

प्रकाशन –चित्रा प्रकाशन, आकोला, चित्तौड़गढ़ ३१२२०५ (राज.)

मूल्य ७५/-

जय रक्तदाता- सुचिंतक, लेखक श्री मधुकांत द्वारा रक्तदान के महत्व के प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करती १५ कविताओं का संकलन जिनसे रक्तदान हेतु प्रेरणा एवं सूचना प्राप्त होती है।

प्रकाशन –अनु प्रकाशन, सी–७०, पहली मंजिल गली नं. ३, उत्तरी छज्जुपुर, दिल्ली ११००९४

मूल्य १००/-

चन्दा सुने कहानी- देवपुत्र के कार्यकारी संपादक गोपाल माहेश्वरी का सम्पूर्ण बहुरंगी ३७ बाल कविताओं का संग्रह।

प्रकाशन –विद्याभारती संस्कृति शिक्षा संस्थान, संस्कृति भवन, सलारपुर रोड़, कुरुक्षेत्र १३६११८ (हरियाणा)

उलझ गए!

• देवांशु वत्स

'अ' और 'ब' दोनों भाई हैं। 'स' और 'द' दोनों बहनें हैं। 'अ' का बेटा 'न' 'द' का भाई है। आपको यह बताना है कि 'ब' और 'स' में क्या रिश्ता है?

आपकी पाती

✸ **डॉ. दयाराम मौर्य 'रत्न', प्रतापगढ़ (उ.प्र.)**– कुशलतापूर्वक रहते हुए आपकी कुशलता की सदा कामना ईश्वर से करता हूँ। पत्रिका प्रतिमास प्राप्त हो रही है। पढकर अति हर्ष होता है। बालोपयोगी सामग्री का संयोजन बहुत ही सुनियोजित ढंग से किया जाता है। बाल कविता, कहानी, वार्तालाप, एकांकी, भ्रमण, पर्व और जयंतियों से जुड़े विविध विषयों को सामग्री का प्रकाशन करने से देवपुत्र हिन्दी जगत में बहुत लोकप्रिय है। आप तथा सम्पादक मण्डल के सभी मित्रों को बधाई।

उत्तम बाल साहित्य से उत्तम पीढी का निर्माण होता है। यह उक्ति चरितार्थ हो रही हैं। अमूल्य कार्य तथा उपलब्धियों के लिए आपको हार्दिक बधाई।

****

✸ **जया मोहन, प्रयागराज (उ.प्र.)** – मैं देवपुत्र का प्रत्येक अंक पढ़ती हूँ। मुझे लगता है बाल साहित्य की इतनी ज्ञानवर्धक, मनोरंजक बाल साहित्य की ये सबसे सुन्दर पत्रिका है। आप इसमें प्राचीन से लेकर अब तक की सभी जानकारियाँ कहानी, गीत के रोचक माध्यम से बच्चों को देते हैं। मौसम, तीज त्यौहार, महापुरुषों के बारे में इतनी रोचक जानकारी बच्चों को सुलभ कराने के लिए आपको तथा आपकी टीम को कोटिशः धन्यवाद। मेरी कामना है कि पत्रिका दिनोदिन नूतन सोपान चढकर सफलता का परचम फैलाये। गागर में सागर जैसी जानकारियां भरने के लिए पुनः साधुवाद।

आओ जरा हँस लो

• विष्णुप्रसाद चौहान

डाक्टर ने महिला के मुंह में थर्मामीटर रख कर कुछ देर मुंह बन्द रखने को कहा।

पत्नी को खामोश देखकर पति ने डाक्टर साहब से कहा- डॉ. साहब यह जादुई चीज कितने की आती है।

*****

एक गंजा व्यक्ति बिना कॉलर की टी शर्ट में पत्नी से पूछता है- ''कैसा लग रहा हूं।''

पत्नी- अजी छोड़ो भी।

गंजा - तुझे मेरी कसम बता न!

पत्नी - ऐसे लग रहे हो जैसे फटे हुए मौजे से अंगूठा बाहर निकल आया हो।

*****

जिंदगी में एक बात हमेशा याद रखना दोस्त...

जीमने की पंगत में नमक वाला कभी दोबारा नहीं आता।

*****

एक दिन सफलता भी आपके कदम चूमेगी। बस पैरों को धोकर रखना।

*****

जानवरों के हॉस्पिटल में अलग ही समस्या है। यहां रजिस्टर में नाम मालिक का लिखा जाता है और बीमारी जानवर की।

जैसे- नाम सुरेश और बीमारी- पूंछ में सूजन।

*****

सोनू (पिताजी से)- पिताजी, नेताओं के कपड़ों का रंग सफेद क्यों होता है?

पिता- बेटा, ताकि दल बदलने पर भी कपड़े न बदलने पड़े।

– ढबला हरदू (म.प्र.)

सही उत्तर

समस्या हल

पहले तराजू के दोनों पल्लों पर तीन तीन गोले रखेंगे। तीन गोले अलग रखे रहेंगे। तराजू बता देगी कि तराजू पर रखे उन तीन तीन गोले के सेट कौन से सेट में वह कम वाला गोला है। या कि उन छः गोले में वह नहीं है। यदि उन छ गौले में वह नहीं है तो वह अलग रखे तीन गोले में है। अब इन तीनों सेटों में से जिसमें वह गोला है उसके एक एक गोले को तराजू के दोनों पल्लों पर रखें। इन दोनों में यदि वह कम वजन वाला गोला है तो उसे छांट दे अन्यथा वह अलग रखा गोला कम वजन का है। इस तरह तराजू का उपयोग केवल दो बार करके आप कम वजन वाला गोला छाँट सकेंगे।

छोटा बड़ा

९,१,७,५,२,१०,६,३,४,८

उलझ गए

'ब' 'स' का रिश्ते में चाचा लगेगा।

इनडोर गेम
(कक्षीय खेल)

चित्रकथा
देवांशु वत्स

भवालकर स्मृति कहानी प्रतियोगिता २०१८

प्रिय बच्चो,

प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी देवपुत्र के पूर्व व्यवस्थापक स्व. श्री शांताराम जी भवालकर की पावन स्मृति (७ जनवरी) के अवसर पर भवालकर स्मृति कहानी प्रतियोगिता के लिए आपकी स्वरचित बाल कहानियाँ प्रविष्टि के रूप में आमंत्रित हैं। प्रतियोगिता केवल बाल लेखकों के लिए है अतः कहानी के स्वरचित, मौलिक एवं अप्रकाशित होने के प्रमाण पत्र के साथ अपना पूरा नाम कक्षा एवं घर के पते का पिनकोड एवं अपना मोबाइल नं. अवश्य लिखें। आपकी बाल कहानी हमें ३१ मार्च २०१९ तक अवश्य प्राप्त हो जाना चाहिए। कहानी इस पते पर भेजें-

पुरस्कार

प्रथम : १५००/- ● द्वितीय : ११००/- ● तृतीय : १०००/-

५५०/- के दो प्रोत्साहन पुरस्कार

भवालकर स्मृति
कहानी प्रतियोगिता २०१८
देवपुत्र, ४०, संवाद नगर, इन्दौर ४५२००१ (म.प्र.)

प्रविष्टियां सादर आमंत्रित

डॉ. परशुराम शुक्ल बाल साहित्य पुरस्कार २०१८

सुप्रसिद्ध बाल साहित्यकार डॉ. परशुराम शुक्ल (भोपाल) द्वारा देवपुत्र के माध्यम से विषय केन्द्रित बाल साहित्य लेखन को प्रोत्साहित करने की दृष्टि से 'डॉ. परशुराम शुक्ल बाल साहित्य पुरस्कार' की स्थापना वर्ष २०१६ में की गई।

वर्ष २०१८ के लिए यह पुरस्कार भारत के स्वतंत्रता संग्राम में बालो और किशोरों की भूमिका पर आधारित प्रसंग के लिए निश्चित किया गया है। आपकी रचनाएँ (बाल कहानी) सादर आमंत्रित हैं।

कृपया ध्यान दें

- आपकी रचना बाल कहानी वह अप्रकाशित, अप्रसारित मौलिक हो, इसे आप स्वयं प्रमाणित करके भेजें।
- रचना हिन्दी भाषा में हो। (अनूदित रचनाएं न भेजें।)
- रचना हमें ३१ मार्च २०१९ तक अवश्य प्राप्त हो।
- लिफाफे पर 'डॉ. परशुराम शुक्ल बाल साहित्य पुरस्कार २०१८ हेतु' अवश्य लिखें।
- रचनाओं के प्रकाशन का अधिकार देवपुत्र को होगा। जो किसी विशेषांक या स्वतंत्र पुस्तक के रूप में भी संभव है।
- सर्वश्रेष्ठ ५ रचनाकारों को क्रमशः १५००/-,१२००/-, १०००/- एवं ५००/- रूपए के दो प्रोत्साहन पुरस्कार दिए जाएंगे।
- निर्णायकों का निर्णय सर्वमान्य होगा।

रचनाएं ४० संवाद नगर, इन्दौर ४५२००१ (म.प्र.) के पते पर भेजिए।

महिला बाल साहित्यकार सम्मेलन बारह पुस्तकें लोकार्पित

इन्दौर। देवपुत्र द्वारा आयोजित महिला बाल साहित्यकार सम्मेलन के द्वितीय दिवस प्रथम सत्र में डॉ. ललित बिहारी गोस्वामी, डॉ. विमाल भण्डारी, डॉ. भगवतीप्रसाद द्विवेदी, श्री कृष्णकुमार अष्ठाना, डॉ. परशुराम शुक्ल द्वारा विभिन्न कृतियों का लोकार्पण किया गया।

लोकार्पित कृतियाँ है-

आत्मज्ञान में जगत दर्शन	(चिंतनपरक निबंध)	• डॉ. पद्मा सिंह, इन्दौर
महाभाव का पथ	(काव्य संग्रह)	• श्री दुष्यंत दीक्षित, इन्दौर
पहले वाली बस	(कहानी संग्रह)	• श्री गोपाल माहेश्वरी, इन्दौर
पाती बिटिया के नाम	(पत्र संग्रह)	• डॉ. विकास दवे, इन्दौर
निंदिया को पंख लगे	(बाल काव्य)	• डॉ. प्रीति प्रवीण खरे, भोपाल
नीम भवानी	(काव्य)	• श्री अरविन्द साहू,
छाँह संस्कृति की	(काव्य संग्रह)	• डॉ. इन्दुराव, गुरुग्राम
बेटी मेरी बेटी	(बाल काव्य)	• श्री राजेन्द्र कोचला 'अम्बर', इन्दौर
चन्दा सुने कहानी	(बाल कविता संग्रह)	• श्री गोपाल माहेश्वरी, इन्दौर
परियों का पेड़	(बाल उपन्यास)	• श्री अरविन्द साहू,
भगिनी निवेदिता	(जीवन अंश)	• श्री गोपाल माहेश्वरी, इन्दौर
स्वर्णिम सन्देश	(कविता संग्रह)	• श्रीमती सावित्री जगदीश चौरसिया, मण्डला

प्रताप सम्मान हेतु प्रविष्टि आमंत्रित

क्रांतिकारियों पर प्रचुर लेखन करने वाले कविश्रेष्ठ पं. छोटेलाल पाण्डेय (सतना) द्वारा क्रांतिकारियों पर काव्य सृजन को प्रेरित करने हेतु इस वर्ष भी प्रताप सम्मान प्रदान करने की घोषणा की गई है। प्रविष्टि स्वरूप क्रांतिकारियों पर लिखी कविताएं दिनांक ३१ मार्च, २०१९ तक प्रताप सम्मान २०१८ के नाम से

देवपुत्र

४०, संवाद नगर, इंदौर ४५२००१ (म.प्र.)
के पते पर सादर आमंत्रित हैं।

।। सर्वश्रेष्ठ रचनाओं पर पुरस्कार ।।

प्रथम पुरस्कार २१००रु. द्वितीय पुरस्कार १५००रु. तृतीय पुरस्कार ११००रु.

विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित साहित्यकार

देवपुत्र गौरव सम्मान समारोह सम्पन्न

इन्दौर। सरस्वती बाल कल्याण न्यास द्वारा प्रकाशित देवपुत्र बाल मासिक द्वारा आयोजित सप्तम **देवपुत्र गौरव सम्मान २०१८** का गरिमामय आयोजन देवपुत्र सभागार में दिनांक १२ जनवरी, २०१९ को सम्पन्न हुआ। पटना के सुप्रसिद्ध बाल साहित्यकार डॉ. भगवतीप्रसाद द्विवेदी को इस भव्य समारोह में विद्याभारती के राष्ट्रीय महामंत्री डॉ. ललित बिहारी गोस्वामी (नई दिल्ली) एवं ख्यात साहित्यकार श्रीमती लीला मेंहदले (पुणे) सहित देशभर से पधारी महिला बाल साहित्यकारों की सारस्वत उपस्थिति में मानपत्र, शाल, श्रीफल, स्मृति चिन्ह एवं ३५ हजार रुपए की सम्मान निधि भेंट कर सम्मानित किया।

इस अवसर पर देवपुत्र द्वारा आयोजित विभिन्न पुरस्कार एवं अन्य सम्मान भी प्रदान किए गए।

मायाश्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार श्रीमती पद्मा चौगांवकर (गंजबासौदा) को उनकी बाल कहानी संग्रह 'सतरंगी कहानियाँ' के लिए प्रदान किया गया। **डॉ. परशुराम शुक्ल बाल साहित्यकार पुरस्कार** के उपस्थित विजेता डॉ. लता अग्रवाल एवं डॉ. सुधा गुप्ता 'अमृता' को एवं **प्रताप सम्मान** के लिए श्री राजेन्द्र कोचला 'अम्बर' को उनकी कृति 'क्रांतिकारी और उनके अमर पत्र' के लिए सम्मनित किया गया।

समारोह का संचालन डॉ. विकास दवे एवं आभार प्रदर्शन प्रबंध न्यासी श्री राकेश भावसार ने किया।

इस अवसर पर देवपुत्र के आद्यसंपादक मा. रोशनलाल जी सक्सेना को श्रद्धांजलि भी अर्पित की गई।

देवपुत्र गौरव सम्मान

दो दिवसीय महिला बाल साहित्यकार सम्मेलन

इन्दौर। दिनांक १२-१३ जनवरी, २०१९ को सरस्वती बाल कल्याण न्यास द्वारा आयोजित अखिल भारतीय स्तर के महिला बाल साहित्यकार सम्मेलन का दो दिवसीय आयोजन देवपुत्र सभागार में सम्पन्न हुआ। सम्मेलन में विविध सत्रों में डॉ. विमला भण्डारी, सलुम्बर (राजस्थान), डॉ. लीना मेंहदले, पुणे (महाराष्ट्र), श्रीमती पवित्रा अग्रवाल, हैदराबाद (आंध्र प्रदेश), डॉ. इन्दुराव, गुरुग्राम (हरियाणा), डॉ. प्रभा पंत, हल्द्वानी (उत्तराखण्ड), डॉ. मंजरी अग्रवाल, पानीपत (हरियाणा), डॉ. नीलम राकेश, लखनऊ (उत्तर प्रदेश), श्रीमती पद्मा चौगांवकर, गंजबासौदा (मध्य प्रदेश), डॉ. सुधा गुप्ता, कटनी (मध्य प्रदेश), सुश्री कीर्ति श्रीवास्तव, भोपाल (मध्य प्रदेश), डॉ. लता अग्रवाल, भोपाल (म.प्र.), श्रीमती सावित्री जगदीश चौरसिया, मण्डला (म.प्र.), श्रीमती मीरा जैन, उज्जैन (म.प्र.), डॉ. प्रीति प्रवीण खरे, भोपाल (म.प्र.), श्रीमती शशि शुक्ला, कानपुर (उत्तर प्रदेश) एवं डॉ. पद्मा सिंह (इन्दौर), श्रीमती नियती सप्रे (इन्दौर), सुधा चौहान (इन्दौर) सहित स्थानीय महिला बाल साहित्यकारों में- संस्कारक्षम बाल साहित्य लेखन-लेखिकाओं की सहजवृत्ति, बाल साहित्य में उपदेश का निषेध कितना उचित?, बाल साहित्य : बालिका विमर्श को कितना स्थान?, अध्यात्मिक जीवन मूल्य देने में समर्थ लेखनधर्मी मातृशक्ति, ओजस्विनी/तेजस्विनी बालिकाएं कैसे साकार रहें?, वर्तमान बाल साहित्य में सूखती वात्सल्य रसधारा जैसे विषयों पर सार्थक विमर्श सम्पन्न हुआ।

उपस्थित बाल साहित्यकार बहिनों ने श्री अष्ठाना जी का भावभीन अभिनंदन भी किया।

सम्मेलन का उद्घाटन सत्र स्वामी विवेकानंद जी को समर्पित रहा। उनकी जयंती के उपलक्ष्य में शारदामठ इन्दौर की परिव्राजिका पूज्या अमितप्राणा जी (माताजी) एवं डॉ. विमला भण्डारी ने मार्गदर्शन दिया। प्रस्ताविकी प्रस्तुत करते हुए श्री कृष्णकुमार अष्ठाना ने विवेकानंद जी की प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला। संचालन गोपाल माहेश्वरी एवं स्वागत डॉ. कमलकिशोर चितलांग्या एवं श्री राकेश भावसार ने किया।

अंत में डॉ. चक्रधर नलिन एवं श्री विष्णुप्रसाद चतुर्वेदी को श्रद्धांजलि भी अर्पित की गई।

भारत देश

कविता : स्व. चक्रधर 'नलिन'

सकल विश्व में सबसे सुन्दर, भारत देश हमारा है।
नभ-मण्डल में चमक रहा है, जैसे ध्रुवतारा है।।
इसका ऊँचा भाल हिमालय
हर पल रक्षा करता है,
पूरब अरुण निकल कर प्रातः
नव सुन्दरता भरता है,
इसके चरण पखार रहा है
गहरा नीला सा सागर,
मलय पवन आनन्द लुटाता
सभी दिशा से आ आकर,
मन को देता है, प्रसन्नता, दृश्य यहाँ पर प्यारा है।
सकल विश्व में सबसे सुन्दर, भारत देश हमारा है।

इसकी शोभा बड़ी निराली
इसके सुत है, वीर, महान,
महानदी, गंगा, कावेरी,
यमुना, सरयू नित गतिमान,
माटी बहुत उर्वरा इसकी
हरा, भरा अनुपम आँचल,
बादल जल बरसाते पग में
पहने बिजली की पायल,
सभी भारतीयों के मन में, बहती मधुरस धारा है।
सकल विश्व में सबसे सुन्दर, भारत देश हमारा है।
इसके पर्वत, निर्झर, नदियाँ,
तेरा यश नित गाती हैं
चिड़ियाँ, भौंरें और तितलियाँ
अतिशय सुख पाती हैं,
सभी मनुष्य प्रेम से रहते
भेदभाव का नाम नहीं है,
सभी सुखी, सम्पन्न यहाँ जन
रोग, शोक का काम नहीं है,
सर्वोन्नत विज्ञान जगत में, यह जगती पर न्यारा है।
सकल विश्व में सबसे सुन्दर, भारत देश हमारा है।

- लखनऊ (उ.प्र.)

श्रद्धांजलि

डॉ. चक्रधर 'नलिन' नहीं रहे

बाल साहित्य जगत को अपनी अमृतमयी रचनाधर्मिता से सिंचित करने वाले वयोवृद्ध बाल साहित्यकार डॉ. चक्रधर 'नलिन' का दिवंगत होना बाल साहित्य जगत में अपूरणीय क्षति है।

देवपुत्र गौरव सम्मान साहित्य सहित बाल साहित्य के शीर्ष पुरस्कारों एवं सम्मानों से विभूषित श्री नलिन जी की इस वार्द्धक्य में भी अनवरत साहित्य साधना चल रही थी। वे अनेक बाल पत्रिकाओं के नियमित लेखक व अनेक पुस्तकों के सर्जक विद्वान थे। देवपुत्र परिवार उन्हे हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

Parwati Prema Jagati Saraswati Vihar

Durgapur, Nainital - 263130 (Uttarakhand)

An English Medium Senior Secondary Residential School For Boys
(A Unit of Vidya Bharti, Affiliated to C.B.S.E.)

- A world class residential school located in the foothills of Nainital that provides moral and value based education connecting Indian culture & traditions.
- Hi-tech Computer Lab, Wi-Fi Campus and well equipped smart class rooms
- Virtual classroom features & student innovation centre.
- ATL & Artificial Intelligence laboratories.
- NCC, NSS, Scout Units, English conversational Programme and preparations for IIT, CPMT & other competitive exams.
- Indo Korean Taekwondo centre and Extension centre for "SAI".
- Highly qualified, experienced, innovative and motivated faculties.
- Outstanding performance in games & sports in National & international level.
- Excellent board results and substantial selection in various competitive exams.

ADMISSION NOTICE FOR CLASS VI & IX FOR THE ACADEMIC SESSION 2019-20

An entrance test will be conducted on 17th February 2019. Entrance test form is available at the school office and school website **www.ppjsvihar.in**, on the payment of rupees 1000/-.Admission form can be downloaded from website and sent to the school along with a DD of Rs 1000/-. DD should be in favour of P.P.J. Saraswati Vihar payable at Nainital. The last date of submission of application form is **10 February 2019.**

For more information you can visit to our School OR School website www.ppjsvihar.in

Ph (05942) 224071/ 72, 7351006369, Fax (05942) 236853
Email- ppjsvihar@gmail.com | Website- www.ppjsvihar.in

Dr. K.P. Singh
Manager

डाक पंजीयन : एम.पी./आय.डी.सी./६२३/२०१८-२०२० प्रेषण तिथि: ३० जनवरी, २०१९ आर.एम.एस., इन्दौर आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५

MCL Saraswati Bal Mandir Sr. Sec. School

L-Block, Hari Nagar, New Delhi-110064

E-mail:mclsbmhn@gmail.com || website: mclsbm.com || Ph: 011-28124302, 28121540

...Our Strength and Strategic Dimensions ...

"Education is not the learning of facts but the training of the mind to think."

* MCL - A unique combination of progressive, dynamic and Scientific approach with high values of Indian culture.
* Use of Sophisticated Latest Scientific Technology.
* Optimum effort to ignite students potential.
* A dynamic Teacher Conclave.
* To promote world class stndards in vision as well as infrastructure.
* Appreciation of parental and community involvement in the school.
* To chistel the students for the stiff competition & challenges of Modern Living.
* All Streams Science , Commerce and humanities are Available for classes XI and XII .
* Providing well planned Co-Curricular activities as yog Music, Dance, Art & Craft , Home Science, sports for allround development of students.
* CCTV Survelliance.
* First School under Vidya Bharti trapping " Solar Energy".
* Scholarship (PRERNA) for outstanding students.
* I.T Dept. for keeping computerized record of students and homework via SMS .
* A big Digital Library — Storehouse of Knowledge.
* ATL Labs(ATAL TINKERING LAB) to develop scientific skills among students for adopting ROBOTICS.

Our labs & Medical Centre

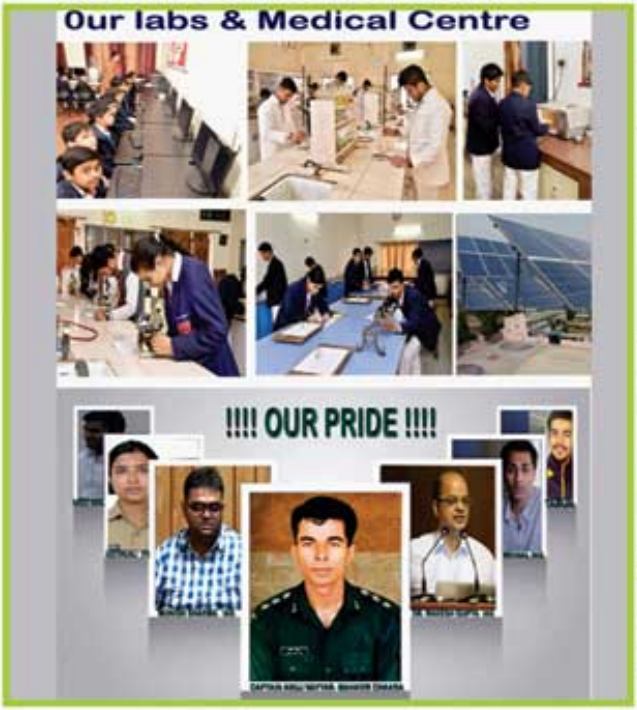

सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशन कृष्णकुमार अष्ठाना द्वारा अजीत प्रिन्टर्स एण्ड पब्लिशर्स, प्रेस कॉम्पलेक्स, इन्दौर से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, इन्दौर से प्रकाशित प्रधान सम्पादक - कृष्णकुमार अष्ठाना